ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अप्रैल-२०१९

अप्रैल-२०१९ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

पराक्रमी और तेजस्वी,
दृढ़ निश्चयी हमारा शासक हो।
दुश्मन थर्रा जाए जिससे,
वह दण्डनीति का धारक हो।
ऋषि कहते 'इन्द्र' वही होता,
जो मान्य, अजेय व्रत पालक हो।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८८

श्रेष्ठ क्वॉलिटी, उत्तम स्वाद,
एम.डी.एच. मसालों में है कुछ बात।
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
MDH Chana masala
MDH Garam masala
MDH Peacock Kasoori Methi
MDH Chunky Chat masala
MDH Deggi Mirch
MDH Sambhar masala
MDH Dal Makhani masala
MDH Shahi Paneer masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Kitchen King
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
चैत्र शुक्ल द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

April - 2019

०४	वेद सुधा
१७	महर्षि दयानन्द ने क्या दिया? और क्या किया?
१९	आर्यों को नमन
२०	ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-८
२१	आर्यसमाज की स्थापना क्यों की गई थी?
२३	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१९
२४	राजकुमार की रसोई
२७	कथा सरित- बदलाव
३०	सत्यार्थ पीयूष- बहुदेवतावाद

समाचार २८

हलचल २९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ११

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

यजुर्वेद में योग एवं योगी

योग का अर्थ आत्मा और परमात्मा का संगम है। वैसे परमात्मा सर्वव्यापक होने से आत्मा में भी व्यापक है। परन्तु आत्मा द्वारा उसका अनुभव सामान्य स्थिति में नहीं होता है। अष्टांग योग द्वारा ही उसका अनुभव होता है। इसके लिए चित्त वृत्तियों का शान्त होना अत्यावश्यक है। योगशास्त्र में कहा गया है- **'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'** योग चित्त की वृत्तियों को रोकता है। उसके द्वारा ही आत्मतत्व का ज्ञान होता है, **'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्'** तब वृत्तियों के निरोध होने पर दृष्टा की स्वरूप में अवस्थिति होती है। अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार बाह्यसाधन तथा धारणा, ध्यान और समाधि अन्तरंग साधन माने जाते हैं। वेद चूँकि सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है इसलिए उसमें योग पर भी पर्याप्त विवरण उपलब्ध है परन्तु सम्पूर्ण विवरण अंकुरवत् ही है पूर्ण वर्णन तो पातंजल योग शास्त्र में है। यहाँ इस लेख में हम यजुर्वेद अध्याय सात में योग और योगी के विषय में जो वर्णन है उसे संक्षेप में रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। यजुर्वेद का कथन है कि योग विद्या के अभाव में कोई भी मनुष्य पूर्ण विद्यावान् नहीं बन सकता है और पूर्ण विद्या के अभाव में परमात्मा का ज्ञान भी नहीं प्राप्त कर सकता है, इस लिए यह आवश्यक है कि हम योग विद्या को जानें।

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वायुषे मे
वर्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्। - यजुर्वेद ७/२८

पदार्थ- हे (वर्चोदाः) योग और ब्रह्म विद्या के देने वाले विद्वन्। आप (मे) मेरे (आत्मने) आत्मा के लिए (वर्चसे) अपने आत्मा के प्रकाश को (पवस्व) प्राप्त कीजिए। हे (वर्चोदाः) बल देने वाले विद्वन् (मे) मेरे (आयुष) जीवन के लिए (वर्चसे) रोग छुड़ाने वाले औषध को (पवस्व) प्राप्त कीजिए। हे (वर्चोदसौ) योग विद्या को पढ़ने-पढ़ाने वालों! तुम दोनों (मे) मेरी (विश्वाभ्यः) समस्त (प्रजाभ्यः) प्रजाओं के लिए (वर्च से) सद्गुण प्रकाश करने को (पवेथाम्) प्राप्त कराया करो।

भावार्थ- योग और ब्रह्मविद्या देने वाले विद्वान् से प्रार्थना की गई है कि वह योग के मार्ग में यात्रा प्रारम्भ करने वाले साधक की आत्मा के लिए प्रकाश को प्राप्त करे तथा उसके आत्मबल को बढ़ाने के लिए उसके जीवन के लिए रोग छुड़ाने वाले औषध को प्राप्त करे। फिर योग गुरु एवं साधक को कहा गया है कि वे समस्त जनता में सद्गुण फैलाने के लिए प्रयत्न करते रहें। योग विद्या के जिज्ञासु को चाहिए कि वह यम, नियमों तथा योग के अंगों से चित्त की वृत्तियों को रोककर अविद्यादि दोषों का निवारण करके संयमपूर्वक ऋद्धि-सिद्धियों को सिद्ध करें।

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम्।
उरुष्य रायऽएषो यजस्व॥ - यजुर्वेद ७/४

पदार्थ- हे योग जिज्ञासु! जिसमें तू (उपयामगृहीतः) योग में प्रवेश करने वाले नियमों से ग्रहण किए हुए के समान (असि) है। इस कारण (अन्तः) भीतर जो प्राणादि पवन और इन्द्रियाँ हैं इनको (यच्छ) नियम में रख। हे (मघवन) परमपूजित धनी के समान तू (सोमस्) योग विद्या सिद्ध ऐश्वर्य की (पाहि) रक्षा कर। (उरुष्य) जो अविद्या आदि क्लेश हैं उनको योगबल से नष्ट कर जिससे (रायः) ऋद्धि और (इषः) इच्छा सिद्धियों को (आ जयस्व) अच्छे प्रकार प्राप्त हो।

अगले मंत्र में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड में जिस प्रकार के जितने पदार्थ हैं उन्हें योग विद्या सम्पन्न व्यक्ति ही जान सकता है अन्य कोई नहीं। योग के विद्यार्थी को यम, नियम आदि योग के साधनों को अपने जीवन में धारण करना अत्यन्त आवश्यक है। यम और नियम इस प्रकार हैं-

अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः॥ - योगदर्शन २/३०

शौच सन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः। – योगदर्शन २/३२

योगी को योग विद्या का प्रचार अत्यन्त मधुर वाणी में करना चाहिए।

या वां कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
उपायामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।। – यजुर्वेद ७/११

पदार्थ– हे (अश्विनौ) सूर्य और चन्द्र के तुल्य योग के पढ़ने-पढ़ाने वालो। (या) जो (वाम्) तुम्हारी (मधुमती) प्रशंसनीय मधुर गुणयुक्त (सुनृतावती) प्रभात समय में क्रम-क्रम में प्रदीप्त होने वाली उषा के समान (कशा) वाणी है (तया) उससे (यज्ञम्) ईश्वर के संग कराने हारे योगरूपी यज्ञ को (मिमिक्षतम्) सिद्ध करना चाहो। हे योग विद्या के पढ़ने वाले। तू (उपयामगृहीतः) यम, नियमादि से स्वीकार किया गया (असि) है। (ते) यह योग (योनिः) घर के समान सुखदायक है इससे (अश्विभ्याम्) प्राण और अपान के यथोचित नियमों के साथ वर्तमान (त्वा) तुम और हे योगाध्यापक (माध्वीभ्याम्) माधुर्य के लिए जो श्रेष्ठ नीति और योग रीति के उनके साथ वर्तमान (त्वा) आपका हम लोग आश्रय करते हैं अर्थात् आपके समीपस्थ होते हैं।

अगले मंत्र में कहा गया है कि योग विद्या जिज्ञासु शमदमादि गुण युक्त पुरुष ही योग बल से विद्याबल की उन्नति कर सकता है। वही अविद्या अन्धकार का विध्वंस कर योग विद्या का प्रचार कर सकता है। इससे अगले मंत्र में इसी विषय को बढ़ाकर इस प्रकार कहा है–

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परिह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्।
संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तःशण्डःशुक्रस्याधिष्ठानमसि।। – यजुर्वेद ७/१३

पदार्थ– हे योगिन्। (सुवीरः) श्रेष्ठ वीर के समान योग बल को प्राप्त हुए आप (वीरान्) अच्छे अच्छे गुणयुक्त पुरुषों को (प्रजनयन्) प्रसिद्ध करते हुए (परीहि) सब जगह भ्रमण कीजिए। इसी प्रकार (यजमानम्) धन आदि पदार्थ देने वाले पुरुषों के (अभि) सम्मुख (रायः) धन की (पोषेण) पुष्टि से (संजग्मानः) संगत हूजिये और आप (दिवा) सूर्य और (पृथिव्या) पृथ्वी के गुणों के साथ (शुक्रः) अति बलवान (शुक्रशोचिषा) सब को शोधने वाले सूर्य की दीप्ति से (निरस्तः) अन्धकार के समान पृथक् हुए ही योग बल के प्रकाश से विषय वासना से छूटे हुए (शण्डः) शमदमादि गुणयुक्त (शुक्रस्य) अत्यन्त योग बल के आधार (असि) हैं।

भावार्थ– शमदमादि गुणों का आधार प्राप्त योगाभ्यास में तत्पर योगीजन अपनी योगविद्या के प्रचार के द्वारा योगविद्या के जिज्ञासु जनों का आत्मबल बढ़ावें और स्वयं सूर्य के समान प्रकाशित होवें। इसी विषय को विस्तार देते हुए अगले मंत्र में कहा गया है कि योग विद्या सम्पन्न शुद्ध चित्तयुक्त योगियों का कर्तव्य है कि जिज्ञासुओं के लिए नित्य योग और विद्या दान दिया करें।

योग विद्या पर स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार है।

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्माऽइन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टाः याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाडग्नीत्। – यजुर्वेद ७/१५

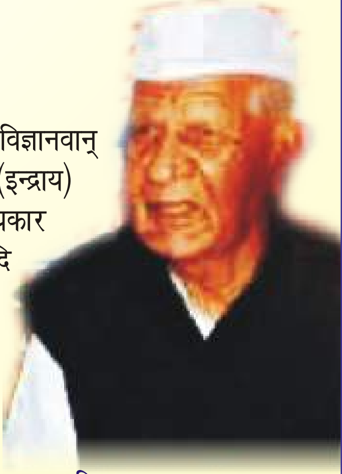

पदार्थ– हे शिष्यो! तुम लोग जैसे पूर्व मंत्र में प्रतिपादित (प्रथमः) आदि मित्र (चिकित्वाम्) विज्ञानवान् (बृहस्पतिः) सब विद्यायुक्त वाणी का पालक जिस ऐश्वर्य के लिए प्रयत्न करता है वैसे (तस्मै) उस (इन्द्राय) ऐश्वर्य के लिए (स्वाहा) सत्यवादी और (सुतम्) निष्पादित श्रेष्ठ व्यवहार का (आजुहोत) अच्छे प्रकार ग्रहण करो और जैसे (यत्) जो (होत्राः) योग स्वीकार करने के योग्य वा (या) जो (मध्वः) माधुर्यादि गुणयुक्त (स्विष्टाः) जिनके लिए अच्छे प्रकार हवन आदि कार्य सिद्ध होते हैं (सुप्रीताः) और जो अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती हैं वे (विद्यान्) स्त्रीजन (अग्नीत्) वा कोई अच्छी प्रेरणा को प्राप्त हुआ विद्वान् योगी (स्वाहा) सत्य वाणी से (अयाट्) सभी को सत्कृत करता हुआ तृप्त रहता है। आप लोग उन स्त्रियों और उस योगी के समान (तृम्यन्तु) तृप्त हूजिये। इस प्रकार यजुर्वेद में योग विद्या करने के लिए जिज्ञासु जनों को प्रोत्साहित किया गया है।

– शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्रीनगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)

'प्रार्थना' हाजिर हो

उल्लू की विशेषता है कि वह अन्धकार से मोह करता है। अन्धकार में ही रहना चाहता है। जबकि मानव प्रकृति से ही प्रकाशोन्मुख है। अन्धकार में आलस्य, प्रमाद उसको घेर लेते हैं जबकि हर सुबह का सूर्योदय उसे एक नवीन ऊर्जा प्रदान करता है जिसके सहारे वह पूरे दिन कर्तव्यरत् रहता है। व्यक्ति किसी भी भूभाग का निवासी हो, वहाँ सूर्योदय कभी भी होता हो, रात्रि कभी भी होती हो साधारणतया प्रकाश की उपस्थिति में ही वह उल्लसित तथा कर्तव्यरत् रहता है। यहाँ इसके अन्य अभिप्राय भी हैं। अविद्या, अंधविश्वास, अनुदारता, असत्य आदि अन्धकार के प्रतीक हैं जबकि विद्या, तर्क, उदारता, सत्य आदि प्रकाश के। अतः मानवमात्र की यात्रा अन्धकार को त्यागकर प्रकाश की ओर होनी चाहिए, यह सर्वमान्य होना चाहिए। अगर भारतीय संस्कृति की बात करें तो कदम-कदम पर यह ध्येय परिलक्षित होता है। इसी को उपनिषद् में **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** के संकल्प अथवा प्रार्थना के रूप में कहा गया है। आज हम हृदय में वेदना के साथ जो लिखने जा रहे हैं इसे इसकी भूमिका स्वरूप समझिये।

संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। अगर संस्कृति विनष्ट हो जाय तो राष्ट्र भी निष्प्राण हो जाता है। उसका तेज, उसका स्वाभिमान, उसका उत्कर्ष समाप्त हो जाता है। वही कौम जिन्दा रहती है जो अपनी संस्कृति को सहेज कर रखती है। संस्कृति का संरक्षण वाङ्मय में भी किया जाता है। वेद सत्य विद्याओं का मूल है। रामायण, गीता, महाभारत, अर्थशास्त्र, गीता, उपनिषद्, दर्शनों में हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति स्पष्ट है। इनकी शिक्षाओं को अपनाकर ही हम विश्वगुरु के पद पर अभिषिक्त थे। परन्तु ऐसा लगता है कि यवन तथा ब्रिटिश हुकूमत में भी जिन नैतिक मूल्यों का नाश नहीं हुआ था आज वह सब हो रहा है।

हमारे माननीय न्यायालयों के प्रति और उनके न्यायाधीशों के प्रति हम अत्यन्त सम्मान की भावना रखते हैं। गत दिनों में 'अत्यधिक न्यायायिक सक्रियता' के चलते उनकी स्थिति सत्ता के क्रम में सुप्रीम हो गयी है। गत वर्ष में माननीय उच्चतम न्यायालय ने कुछ ऐसे फैसले दिए हैं जो राष्ट्र के नैतिक स्वरूप को नयी पतनोन्मुख दिशा देने वाले हो गए हैं। समलैंगिकता तथा व्यभिचार के रास्ते में कानून की जो धाराएँ बाधक थीं उन्हें हटाते समय न्यायालय ने कानून के मूर्त स्वरूप पर ही विचार किया राष्ट्र की आत्मा उनके समक्ष थी ही नहीं वरना उनको भारत की हर श्वांस में राम और कृष्ण के चरित्र की व्यापकता कुछ सोचने पर मजबूर कर देती। क्या विडम्बना है कि राम हमारे आदर्श, पर हमारे

विद्वान् न्यायाधीशों के लिए उनका कोई मूल्यांकन नहीं, जबकि इण्डोनेशिया जैसा मुस्लिम देश अपने बच्चों को रामायण पढ़ाकर उन्हें चरित्रवान बनाने का यत्न कर रहा है। वे गर्व से कहते हैं कि इस्लाम हमारा धर्म है पर रामायण हमारी संस्कृति है।

अब हम असली मुद्दे पर आते हैं- एक सज्जन हैं विनायक शाह। उन्होंने अपने वकील सत्यमित्र एवं पल्लवी शर्मा के माध्यम से एक रिट पेटीशन दाखिल की है जिसमें उन्होंने केन्द्रीय विद्यालयों में की जाने वाली प्रार्थना को असंवैधानिक बताया है। उनके अनुसार हाथ जोड़कर, आँखें बन्द करके प्रार्थना करवाना संविधान के अनुच्छेद १६ और २८(१) का उल्लंघन है। अनुच्छेद १६ जहाँ बोलने तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है वहीं अनुच्छेद २८(१) प्रावधित करता है कि जिन शिक्षण संस्थानों में राजकीय धन का सहयोग प्राप्त होता है वहाँ कोई 'धार्मिक निर्देश' नहीं दिया जा सकता।

उनका कथन है कि संशोधित एजूकेशन कोड के आर्टिकल ६२ के अनुसार सभी विद्यार्थियों को चाहे वे कोई भी आस्था और विश्वास रखते हों अनिवार्य रूप से प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में भाग लेना होगा और अपने हाथ जोड़कर आँखें बन्द कर प्रार्थना-गायन करना होगा और अध्यापकगण इस व्यवस्था को सुनिश्चित करेंगे। शाह के अनुसार यह व्यवस्था असंवैधानिक है। प्रार्थनाकर्त्ताओं का यह भी कथन है कि ऐसी धार्मिक प्रार्थनाएँ वैज्ञानिक वातावरण तैयार करने में बाधक हैं तथा दैनिन्दिन बाधाओं से पुरुषार्थ पूर्वक लड़ने की प्रेरणा देने की बजाय विद्यार्थियों को अलौकिक शक्ति की शरण में जाने हेतु प्रेरित करती हैं। याचिकाकर्त्ता के अनुसार किसी धर्म के बालक को किसी अन्य धर्म की प्रार्थना को अंगीकार करने हेतु विवश नहीं किया जा सकता। संविधान के अनुसार प्रत्येक को अपने धर्म के अनुसार प्रार्थना करने अथवा कोई प्रार्थना न करने का मौलिक अधिकार है। याचिका पर विचार करते हुए जस्टिस नरीमन ने माना है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। उसका कोई धर्म नही है। ऐसे में दण्ड का भय दिखाकर हिन्दू धर्म की प्रार्थना सब बच्चों पर लागू करना संविधान के अनुच्छेद १६ और २८(१) के उल्लंघन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मामला है। अतः उन्होंने याचिका को स्वीकार करते हुए केन्द्र सरकार को नोटिस जारी किया है कि रोजाना सुबह स्कूल में होने वाली हिन्दी और संस्कृत की प्रार्थना से किसी धार्मिक मान्यता को बढ़ावा मिल रहा है? इसकी जगह कोई सर्वमान्य प्रार्थना क्यों नहीं कराई जा सकती?

इससे पूर्व कि इस विषय पर आगे कुछ कहें, जान लें, यह प्रार्थना कौनसी है जिस पर ऐतराज किया गया है। यह है-

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय।

दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।
हमारे ध्यान में आओ प्रभु आँखों में बस जाओ।
अँधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना।।
बहा दो प्रेम की गंगा दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिल-जुल कर प्रभु रहना सिखा देना।।
हमारा धर्म हो सेवा हमारा कर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा व सेवक जन बना देना।।
वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फिदा करना प्रभु हमको सिखा देना।।

ओ३म् सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

यहाँ 'दया कर दान ....से लेकर दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना' तक जो हिन्दी प्रार्थना है उसमें मस्तिष्क में विद्या, आत्मा में शुद्धता, आपस में सौहार्दपूर्वक मिल जुलकर प्रेम से रहने की भावना, सेवाभाव, कर्मण्यता तथा देश-प्रेम की सर्वोच्चता की समझ, की प्रार्थना की गयी है, जो निःसन्देह एक सर्वमान्य प्रार्थना है जिसकी तलाश करने को माननीय न्यायमूर्ति ने कहा है। आश्चर्य है कि उक्त प्रार्थना जिसमें औदार्य, समभाव, साहचर्य, द्वेष रहितता, प्रकाशोन्मुखता हेतु प्रार्थना की जा रही है अथवा दूसरे शब्दों में भी कहें तो इन गुणों को धारण करने हेतु संकल्प किया जा रहा है अथवा ऑटो सजेशन (जिन्हें प्रार्थना शब्द पर ऐतराज है) दिया जा रहा है उसे भी कोई मतजन्य संकीर्णता के साथ कैसे जोड़ सकता है?

जिन्हें प्रार्थना पर इसलिए ऐतराज है कि इसमें एक सुप्रीम सत्ता ईश्वर की संकल्पना है जिसमें विश्वास करने का अर्थ बालक को अकर्मण्य बना देना है, जो एक नास्तिक को स्वीकार्य नहीं है तो सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति में प्रार्थना का क्या स्वरूप है उसे भी अत्यन्त संक्षेप में समझ लेना चाहिए।

केवल हाथ जोड़कर प्रभु से याचना करने मात्र से अभीष्ट की पूर्ति संभव नहीं है। यह अपने आप को भी ध्यान दिलाते रहने का माध्यम है कि हमारा गंतव्य क्या है, हम क्या चाहते हैं? जो चाहते हैं उस हेतु पूर्ण पुरुषार्थ हमें करना ही होगा। पुरुषार्थ करने के उपरान्त ही हम सहाय के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। आँख बन्द करना और हाथ जोड़ना गंभीरता, एकाग्रता, तन्मयता तथा विनम्रता का प्रतीक है। याचिकाकर्त्ता की याचना पर केन्द्र सरकार को नोटिस देते हुए न्यायमूर्ति का कहना है कि क्या कोई सर्वमान्य प्रार्थना नहीं हो सकती? हमारा कहना है कि विश्वभर में इससे ज्यादा सर्वमान्य और उदात्त क्या प्रार्थना हो सकती है? किसे इस बात से विरोध हो सकता है कि हम अन्धकार से प्रकाश की और चलें, सिवाय एक उल्लू के। विद्यार्थी शिक्षणालय में अविद्यारूपी अन्धकार से निकल विद्यारूपी प्रकाश तक पहुँचने के लिए ही तो आता है। प्रार्थना के प्रारम्भ में बृहदारण्यक उपनिषद् का मन्त्र है, जिसमें प्रभु से प्रार्थना की गयी है (जो किसी भी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते, वे इसे नित्य संकल्पित होने और ऑटो सजेशन के रूप में ले सकते हैं) कि (१) हम असत्य से सत्य की ओर चलें (२) हम अन्धकार से प्रकाश की ओर चलें (३) हम मृत्यु से अमरता की ओर चलें। अगर उक्त भावों को कोई मतजन्य संकीर्णता में आबद्ध करता है तो यह विडम्बना ही कही जायेगी। विश्व का कोई भी मत-पन्थ इसके विपरीत उपदेश नहीं करता। आप हिन्दू हों या मुस्लिम-ईसाई यह तो सभी का लक्ष्य है। यहाँ तक कि अनीश्वरवादी भी चाहेगा कि हमारे बालक-बालिकाएँ उक्त भावों की पृष्ठभूमि में अपने जीवन का निर्माण करें। इनको 'धार्मिक निर्देश' कहकर असंवैधानिक कहना कोरी जड़ता है। ऐसे धार्मिक निर्देश दिए जाना तो स्वागत योग्य होने चाहिए। वस्तुतः धर्म के स्वरूप को न समझने के कारण ऐसी घालमेल होती है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने कई ऐतिहासिक निर्णयों में 'हिन्दुत्व' पर विचार करते हुए इसे जीवन पद्धति ही माना है। परन्तु 'संविधान के धर्म-निरपेक्ष शब्द में धर्म की स्पष्ट व्याख्या अपेक्षित है क्योंकि इसी पर सदा से भ्रम फैलाया जा रहा है। सेक्यूलर का अर्थ जो धर्म निरपेक्ष निकालते हैं वे पूर्णतः गलत हैं इसे ज्यादा से ज्यादा 'पन्थ निरपेक्ष' कहा जा सकता है। धर्म और पन्थ में जमीन आसमान का भेद है। इसे या तो लोग समझते नहीं हैं या स्वार्थवश समझकर भी अनजान बने रहते हैं।

धर्म और मजहब या पन्थ में भेद

१. धर्म क्रियात्मक वस्तु है और मजहब विश्वासात्मक हैं।
२. धर्म ईश्वरीय सृष्टि नियमानुकूल मनुष्य के स्वभावानुकूल है, किन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अस्वाभाविक हैं।
३. धर्म शाश्वत, नित्य, सनातन, अद्वितीय और अपरिवर्तनशील है, परन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अनित्य, परिवर्तनशील, अनेक और परस्पर विरुद्ध भिन्न-भिन्न हैं।
४. धर्म का सम्बन्ध मानव मात्र से है, किसी विशेष देश, जाति या वर्ग से नहीं, किन्तु मजहब देश और काल से प्रभावित होता है तथा यह एक सामूहिक संगठन के लिये होता है।
५. धर्म मनुष्य के आचरण का विषय है, परन्तु मजहब में किसी का अनुयायी होना ही पर्याप्त है।
६. धर्म सदाचारी बनाता है, परन्तु मजहब में किसी का अनुयायी होना ही पर्याप्त है।
७. धर्म का कोई मनुष्य संस्थापक नहीं, किन्तु मजहब या सम्प्रदाय का कोई संस्थापक अवश्य होना चाहिये।
८. धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है, किन्तु मजहब मनुष्य को मजहबी अथवा पन्थाई और अन्धविश्वासी बनाता है।
९. धर्म में बाह्य चिह्नों का कोई स्थान नहीं-'**न लिंग धर्म कारणम्**'। किन्तु मजहब के लिए बाह्य चिह्न नितान्त आवश्यक हैं।
१०. धर्म मानसिक दासता को छुड़ाता है, किन्तु मजहब मानसिक दासता में बाँधता है।
११. धर्म मनुष्य को पुरुषार्थी बनाता है, किन्तु मजहब मनुष्य को आलस्य का पाठ पढ़ाता है।
१२. धर्म सब प्राणियों का हित चिन्तक है, किन्तु मजहब अपने अनुयायी या सम्प्रदाय विशेष के ही हितचिन्तक है।
१३. धर्म सभी प्राणियों के प्रति स्नेह-ममता रखना सिखाता है, किन्तु मजहब अपने सम्प्रदाय विशेष को ही आपस में जुड़ने का निर्देश करता है तथा अन्यों से मारकाट या लूट की खुली छूट है।

१४. मजहब में अकल की दखल नहीं, किन्तु धर्म में तर्क की आवश्यकता है- **'यस्तर्केण सत्यं सिद्धयति सो धर्मः'।**
१५. धर्म और विज्ञान में परस्पर अविरोध होता है जबकि अनेकों मजहबी बात विज्ञान विरुद्ध हैं।

अतः धर्म मानव जीवन का अभिन्न व वरेण्य अंग है। धर्म निरपेक्ष का अर्थ धर्म रहित मानकर जिस दिन धर्म को अनावश्यक करार दे दिया जावेगा उस दिन सारी मानवता और मानवीय मूल्य समाप्त हो जायेंगे। भारतीय संस्कृति में जो धर्म की परिभाषा स्थान-स्थान पर दी गयी है उसे हम स्वीकार करने को उद्यत क्यों नहीं होते यह समझ से बाहर है। क्या केवल इसलिए कि वह भारतीय मनीषियों द्वारा परिभाषित है? अत्यन्त संक्षेप में ही हम धर्म के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराने हेतु कुछ संकेत देंगे-

धर्म वही है जो धारण करने योग्य है।

महाभारत में आता है-

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयेत प्रजाः।
यस्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।

धर्म शब्द का योगार्थ है- जो धारण करे। जो जीवन को धारण करे, जो जीवन में धारण करने योग्य है, वह धर्म है। आर्यावर्त्त के प्रथम शासक ने जब अपने लोगों के लिए 'मनुस्मृति' नाम की एक संहिता (संविधान) तैयार की, तो इसके छठवें अध्याय के ९१वें श्लोक में धर्म के ये दस लक्षण बताये-

धैर्य, क्षमा (सहिष्णुता), मन पर नियंत्रण, चोरी न करना, मन-वचन एवं कर्म की शुद्धता, इन्द्रियनिग्रह, पवित्र बुद्धि, विद्या, सत्यभाषण एवं अक्रोध। क्या दुनिया में ऐसा कोई मत पन्थ सम्प्रदाय है जो उक्त बातों का विरोध करेगा। बस बात यही है। अगर धर्म का वास्तविक रूप सब जान लें तो सब एकमत्य हो जायँ।

महर्षि दयानन्द के लिए धर्म का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। यह सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य मात्र से है। धर्म सभी राष्ट्रों के लिए एक है सभी मजहबों के लिए एक है। यह पूजा पद्धति, उपासना की बाह्य पद्धति-मात्र नहीं है। धर्म को इसी परिप्रेक्ष्य में मानना चाहिए। महाभारत के एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है-

'लोक रंजनमेवात्र राज्ञां धर्मः सनातनः (शांतिपर्व ५७/११) **'** यहाँ स्पष्ट कहा है कि प्रजा को प्रसन्न रखना ही राजा का सनातन धर्म है। राज्य इस लोककल्याणरूपी धर्म को धारण करे, क्या कोई इसका विरोध करेगा?

इसीलिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाशस्थ स्वमन्तव्यामन्तव्य में धर्म के स्वरूप को बिलकुल स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- जो पक्षपातरहित न्यायाचरणयुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको 'धर्म' और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषण आदि ईश्वराज्ञाभंग वेद विरुद्ध हैं, उसको अधर्म मानता हूँ। बताइये ऐसे धर्म को कौन नहीं मानेगा? जो लोग धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्मरहितता समझते हैं वे बुनियादी भूल कर रहे हैं। सत्य तो यह है कि राजनीति में धर्म आ जाय तो वह पवित्र हो जाती है और इसके विपरीत यदि धर्म में राजनीति आ जाय तो वह मनुष्य के लिए भयानक रूप से घातक हो जाता है।

यहाँ प. जवाहरलाल नेहरु को उद्धृत करना उचित होगा-

'श्री जवाहरलाल नेहरु ने ५ अगस्त, सन् १९५४ के भाषण में कहा था 'हम अपने राज्य को शायद धर्मनिरपेक्ष कहते हैं। शायद 'सेक्युलर' शब्द के लिए धर्मनिरपेक्ष शब्द बहुत अच्छा नहीं है। फिर भी इससे बेहतर शब्द न मिलने के कारण इसका प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ है धार्मिक स्वतंत्रता, अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता। इसमें उन लोगों की भी स्वतंत्रता सम्मिलित है जो किसी धर्म को नहीं मानते। स्पष्टतः इसका यह मतलब नहीं है कि यह एक ऐसा राज्य है जहाँ पर धर्मपालन को निरुत्साहित किया जाता है। इसका मतलब है कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों को धर्मपालन की पूरी स्वतंत्रता है, बशर्ते वे दूसरे के धर्म में या हमारे राज्य के मूल सिद्धान्तों में हस्तक्षेप न करें।'

सृष्टि के प्रथम संविधान निर्माता महर्षि मनु ने यही बात मनुस्मृति में भी कही थी कि व्यक्ति जो व्यवहार अन्यों से अपने प्रति चाहता है वही वह अन्यों के साथ करे यही धर्म है (**स्वस्य च प्रियमात्मन-** जो अपनी आत्मा को प्रिय लगे)। बताइये इस कसौटी से कौन पन्थ इंकार करेगा?

धर्म के इस सार्वभौम स्वरूप को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में समझाने का प्रयास किया है। उन्होंने सत्य धर्म की जिज्ञासा रखने वाले जिज्ञासु को कहा कि विभिन्न मत पन्थ वालों से निम्न बातें पूछी जायँ तो सबका उत्तर समान होगा, बस यही धर्म है। और तब स्पष्ट हो जाएगा कि वास्तविक धर्म की सब बातें सर्वमान्य हैं। उन्होंने कहा-

'तू जाकर इन इन बातों को पूछ। सब की एक सम्मति हो जायगी। तब वह उन सहस्रों की मण्डली के बीच में खड़ा होकर बोला कि सुनो सब लोगो! सत्यभाषण में धर्म है वा मिथ्या में? सब एक स्वर होकर बोले कि सत्यभाषण में धर्म और असत्य भाषण में अधर्म है। वैसे ही विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ, सत्यव्यवहार आदि में धर्म और अविद्या ग्रहण, ब्रह्मचर्य्य न करने, व्यभिचार करने, कुसंग, असत्य व्यवहार, छल, कपट, हिंसा, परहानि करने आदि कर्मों में? सब ने एक मत होके कहा कि विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्यादि के ग्रहण में अधर्म्म। अतः स्पष्ट है कि धर्म के सभी अंगों पर वैमत्य हो ही नहीं सकता। होता यह है कि धर्म के तथाकथित बाह्य आचार जो समय-समय पर विभिन्न मत पन्थों में विकसित हो गए हैं वे ही भिन्न हैं और कभी-कभी विपरीत भी हैं। इनको अपनी निष्ठा के अनुसार लोग मानें और करें (जब तक ये किसी भी अर्थात् प्राणिमात्र के विरुद्ध न हों अथवा उसको हानि न पहुँचाते हों) इसमें सबको स्वतंत्रता प्राप्त है और राज्य भी इसमें अपनी ओर से सहयोग अथवा विरोध न करे। यही पन्थ निरपेक्षता का सही अर्थ है।

विद्यालय जाने वाले बालक-बालिकाओं में धर्म के अंगों कि स्थापना करना अत्यावश्यक है इसी से मानवीय मूल्यों का विकास होगा। इन्हीं कसौटियों पर जब बृहदारण्यक उपनिषद् की उक्त प्रार्थना को कस कर देखा जाय तो निश्चित ही यह सर्वमान्य प्रार्थना होगी। ऐसा कोई आधार नहीं है जिस पर कोई निष्पक्ष सहृदय व्यक्ति इसका विरोध कर सके।

उक्त प्रार्थना में हिन्दी प्रार्थना के पश्चात् अंत में तैत्तिरीय उपनिषद् का एक संकल्प है जो गुरु-शिष्य के मध्य तथा आपस में सम्बन्धों के आदर्श को स्थापित करता है। 'हम एक साथ मिलजुलकर रहें अर्थात् हम एक दूसरे की रक्षा में प्रवृत्त हों, मिलजुलकर पदार्थों का उपभोग करें, बल और ओज का संवर्धन करें, हमारा अध्ययन स्पष्ट हो, हम एक दूसरे से विद्वेष नहीं करें।' काश यही भाव राष्ट्र की इस भावी पीढ़ी में उत्पन्न हो जायं तो राष्ट्र सच्चे अर्थों में राष्ट्र बन सकेगा। विद्यार्थी को ऐसे धार्मिक निर्देश उनके और राष्ट्र के कल्याणवर्धक ही हैं। ये प्रार्थना अत्यन्त आवश्यक है इसका विरोध किसी की सनक है, अन्य कुछ नहीं।

अब रहा यह कि ये वाक्य हिन्दी व संस्कृत के हैं सो हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है और संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी। इन भाषाओं का उपयोग भारत में नहीं तो कहाँ होगा? अब यदि कोई उपनिषद् वाक्य होने के कारण इनका विरोध करता है क्योंकि उपनिषद् आर्यों (हिन्दुओं) के धर्मग्रन्थ हैं अतः इनका विरोध करना चाहिए, कि यह एक धर्म की प्रार्थना का दूसरों पर बलात् आरोपण है तो सर्वप्रथम तो जान लेना चाहिए कि उपनिषद् ज्ञान के वे गौरव हैं जिनमें समस्त मानवों के लिए शिक्षा निहित है। यही कारण था कि दाराशिकोह और पाश्चात्य जगत् के अनेक विद्वान् उपनिषदों पर मंत्रमुग्ध हैं। दूसरे यह भी समझ लेना चाहिए कि भारत में अनेक संवैधानिक संस्थाओं तथा विभागों के ध्येय वाक्य उपनिषदों के हैं अथवा संस्कृत के सुभाषित हैं। आप किन-किन का विरोध और क्यों करोगे? अगर यह सब है तो सबसे पहले जिस मान्य न्यायालय में यह याचिका दायर की गयी है उसके मोटो (ध्येय वाक्य) पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा हो जाएगा। न्यायालय का ध्येय वाक्य महाभारत (जिसे हिन्दुओं का धर्मग्रन्थ समझा जाता है) से लिया गया है **'यतो धर्मस्ततो जयः'** 'अर्थात् जहाँ धर्म है वहीं जय है। इस पर कोई भी आपत्ति उठा देगा कि एक धर्म निरपेक्ष राज्य में धर्म को इतना महत्त्व दिया जा रहा है कि माननीय न्यायलय के ध्येय वाक्य में धर्म के विजित होने की बात कह दी गयी। अतः इसे भी हटाना चाहिए। परन्तु हमारे विचार में ऐसी सोच कुंठित सोच होगी। यहाँ धर्म का वही अर्थ है जो ऊपर विवेचित किया गया है। धर्म का अर्थ यहाँ सत्य न्याय से ही है इसमें कोई शंका नहीं। महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा है- 'धर्म है नाम न्याय का, न्याय है नाम पक्षपात को छोड़ना' (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण) जहाँ पक्षपात रहित न्याय होगा वहीं धर्म होगा। यही हमारे न्यायालयों का

कर्त्तव्य है। अतः विरोध का कोई प्रश्न नहीं उठता। यह शाश्वत तथ्य है कि सत्य की ही विजय होती है और एक पक्षपातरहित संवेदनशील न्याय व्यवस्था में ऐसा होना भी चाहिए। भारत के राष्ट्रीय चिह्न में जो 'सत्यमेव जयते' लिखा है वह भी मुण्डक उपनिषद् का वाक्य ही है। संसद भवन में, जो कि भारतीय संप्रभुता का मन्दिर है तथा शासन का मुख्य केन्द्र, वहाँ सभापति के आसन के पीछे लिखा है- 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' अर्थात् धर्म चक्र का प्रवर्तन हो यह हमारा ध्येय है। यहाँ भारतीय संसद किस धर्म का प्रवर्तन कर रही है। निश्चित रूप से मानव धर्म का। धर्म के जिस अर्थ को ऊपर विवेचित किया गया है यहाँ पर वही अर्थ अपेक्षित है। उसी में भारत के सभी नागरिकों का योगक्षेम सम्भव है।

संसद में ही महाभारत का श्लोक उत्कीर्ण है-

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति न तत् सत्यं यच्छलेनानुविद्धम्॥ - महाभारत, सभापर्व ६७/५४

अर्थात् वो सभा नहीं है जहाँ वृद्ध नहीं हों, वो वृद्ध नहीं है जो धर्म की बात नहीं कहते या जो धर्म को नहीं जानते, वो धर्म नहीं है जहाँ सत्य नहीं है और वो सत्य नहीं है जिस पर छल का लेप किया हुआ हो या जिस पर छल कपट का प्रभाव हो। यहाँ वृद्ध से तात्पर्य ज्ञानवृद्ध से ही है और धर्म वही ऊपर विवेचित शाश्वत मानवीय मूल्यों का समुच्चय।

मनुस्मृति का निम्न श्लोक भी संसद की भित्तियों पर अंकित है-

सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समञ्जसम्।
अब्रुवन्विब्रुवन्वाऽपि नरो भवति किल्विषी॥ - मनुस्मृति ८/१३

अर्थात् 'भले ही कोई सभा में प्रवेश ही न करे, किन्तु जब प्रवेश करे, तो ठीक तरह से धर्म एवं न्यायसंगत वचन ही बोलने चाहिए। जो सदस्य या तो सभा में बोलेगा ही नहीं, और बोलेगा तो झूठ बोलेगा, वह पाप का भागी होगा।

विदुरनीति का वाक्य भी संसद की भित्तियों पर शोभायमान होकर सांसदों को प्रेरणा दे रहा है।

न हीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।
दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक॥ - महाभारत, आदिपर्व ८७/१२

अर्थात्- प्राणि मात्र के लिए दया, मैत्री, दान देने की प्रवृत्ति और मधुर संभाषण का स्वभाव यह चारों गुण एक साथ होना त्रिलोक में दुर्लभ है।

इसी तरह लिफ्ट नम्बर चार की तरफ शुक्रनीति का श्लोक, राज्यसभा के एक ओर एंट्री गेट की दीवार पर महाभारत के वन पर्व २०७/७४ की सूक्ति 'अहिंसा परमो धर्मः' और दूसरे गेट पर भगवद्गीता का १८/४५ श्लोक 'स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः' उकेरा हुआ है।

भारत के अनेक विभागों ने भी अपने ध्येय वाक्य संस्कृत के आदर्श वाक्यों को रखा है- 'योगः कर्मसु कौशलम् (गीता २/५०) भारतीय प्रशासनिक सेवा', 'योगक्षेमं वहाम्यहम् (गीता ९/२२) भारतीय जीवन बीमा निगम', 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम (गीता ४/८) उत्तरप्रदेश पुलिस', 'आदित्यात जायते वृष्टिः (मनु ३/७६) भारतीय मौसम विभाग', 'धर्मो रक्षति रक्षितः (मनु. ८/१५) Research and Analysis Wing', आदि-आदि जिन्हें स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं लिख रहे हैं। ये भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण शिखर हैं। ये निर्देश प्रेरणा के स्रोत हैं। ये मत विशेष से सम्बन्ध नहीं रखते वरन् सम्पूर्ण मानवता से सम्बन्ध रखते हैं, और यह सब शर्म का अथवा पक्षपात का नहीं राष्ट्र के सभी अंगों तथा नागरिकों में उदात्त भावों के सम्प्रेषण के लिए है। अतः इन पर रोक लगाने की याचिका नहीं इन पर गर्व करना सीखना चाहिए।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

शनि देवता की ठेकेदारी और हमारा भ्रम

आपने देखा होगा कि प्रत्येक शनिवार को सड़कों पर सार्वजनिक स्थलों, अस्पतालों के सामने एक-एक किलोमीटर की दूरी पर शनि देवता विराजमान होते हैं। पुराने कनस्तर से हाथ-पैर, मुँह व धड़ काटकर शनि देवता को बनाया जाता है। जमीन पर दो ईटों का सहारा देकर इन्हें सड़कों के किनारे टिका दिया जाता है। एक दो फूलों के हार भी चढ़ा दिए जाते हैं। जनता इसे देवता मानकर नतमस्तक होती है व श्रद्धानुसार पैसे भी रख देती है। शनि देवता का रचयिता कुछ ही दूरी पर बैठा यह तमाशा देखता रहता है और शाम को पैसे गिनकर जेब के हवाले कर शनि देवता को उठाकर चला जाता है। इसी प्रकार शनि देवता के नाम पर घर-घर में एल्यूमिनियम के कटोरे में सरसों का तेल डालकर लोग आते हैं और आटा व पैसे इकट्ठे करते हैं जिससे जो मिल जाए वही सही। शनि देव-.... का उच्चारण करते हुए सुबह होते ही दरवाजे पर आ धमकते हैं आपको भले ही न याद हो कि आज शनिवार है परन्तु शनिदेव के यह ठेकेदार कैसे भूल सकते हैं। शनि देव कल्याण करें, आपका उद्धार हो- इस वाक्य को सुनते ही जनता विशेषकर स्त्रियाँ इन्हें दक्षिणा देती हैं। यह सोचकर कि वह जो कुछ दे रही हैं वह शनि के प्रकोप से बचने के लिए शनिदेव को अर्पित किया गया है। यही कारण है कि आजकल तीव्रगति से शनि मंदिरों के सामने लम्बी कतारों में भक्तजन तेल की शीशी हाथ में लिए दिखाई पड़ते हैं जो शनि देवता पर तेल चढ़ाने के लिए लालायित रहते हैं। ३०-४० किलो तेल हर शनिवार इकट्ठा हो जाता है लगभग ४००० रुपये का तेल चढ़ावे में चढ़ जाता है और पैसा अलग से। क्या वास्तव में यह तेल शनि देवता सेवन करते हैं? या इसके पीछे कुछ और राज छिपा है। यह तेल आटा इत्यादि (पैसा छोड़कर) अर्पित वस्तुएँ तो सायंकाल को परचून की दुकान पर होती हैं। एकत्रित किया गया सरसों का तेल व आटा दुकान पर बेचकर पैसे बनाए जाते हैं।

क्या आप जानना चाहती हैं/चाहते हैं कि शनि देवता के रचयिता का अपना जीवन क्या है? धर्म के नाम पर ये कैसे ढोंग रचते हैं? शनि देवता के नाम पर धन्धा करने वाले इस प्रकार के कुछ व्यक्तियों से मैंने बातचीत की तो दिलचस्प तो थी ही साथ ही उनके जीवन के यथार्थ की कहानी भी है-

सर्वप्रथम मेरी मुलाकात संसद मार्ग पर शनि देवता के एक २० वर्षीय अभिभावक रामकुमार से हो गई। मैंने उनसे पूछा-

प्रश्न- आप धर्म के नाम पर धंधा क्यों करते हैं क्या कोई और काम नहीं मिला आपको?

'क्या करें भाई जी अगर चोरी करते हैं, किसी की जेब काटते हैं तो पुलिस पकड़कर पिटाई करती है। उसे हमारी मजबूरी का मालूम नहीं। फिर यह लोग हमें चोर उचक्के कहते हैं तो हमें ही पता है कि हमारे ऊपर क्या बीतती है। अगर मैं सड़क के किनारे फलों की रेहड़ी लगाता हूँ तो वहाँ भी पुलिस आ जाती है और डंडे मारकर उसे गिरा देती है या फिर १००-१५० रुपये माँगती है कहाँ से दें इतना पैसा? कमाई हो तो दें।

और कोई काम करने के लिए भी पैसा चाहिए, दुकान लेने की बात तो हम सोच भी नहीं सकते। तो फिर यही काम अच्छा है पैसा भी नहीं लगाना पड़ता, धर्म भी कर लेते हैं और कर्म भी।'

प्रश्न- शाम तक कितने पैसे इकट्ठे हो जाते हैं? उनका क्या उपयोग करते हैं आप?

'शाम को १००-१२५ रुपये हो ही जाते हैं, पहले इससे ज्यादा हो जाते थे। जब से सरकार ने ५ दिन का हफ्ता किया है शनिवार को नौकरी पेशा वाले लोग नहीं आते, दूसरे आने वाले ही कुछ पैसे दे जाते हैं? अब आप से क्या छुपाएं, दारु पीते हैं हम इसकी, दो चार रिक्शा वाले अपने दोस्त हैं उनके साथ भर पेट खाते हैं और दारु पीकर सो जाते हैं।'

सुबह पौने आठ बजे कनॉट प्लेस से गुजरते हुए ४० वर्षीय हरिस्वरूप को देखा तो शनि देवता को फूलों से सजा रहा था साथ ही उसने फ्रेम में जड़ी अन्य देवी देवताओं की तस्वीरें भी रखी हुई थीं। उनसे मैंने पूछा आपने तो फुटपाथ पर छोटा सा मन्दिर बना रखा है। दूसरे लोग तो केवल टीन से काटकर शनिदेवता ही बनाए हुए हैं ऐसा क्यों?

'देखो जी! हर बात पैसे के ऊपर होती है। लोग छोटी-छोटी कॉलोनियों से शाम तक ५०-१०० रुपये ही इकट्ठा कर पाते हैं मैं कनॉट प्लेस में बैठा हूँ मेरे आसपास के दफ्तरों में रईस बाबू लोग आते हैं वे हर शनिवार ५ रुपये से लेकर १० रुपये तक चढ़ा जाते हैं हमारे लिए तो यह कुबेर हैं। आते-जाते लोग मन्दिर देखकर पैसा दे ही जाते हैं। मेरे पास पैसा ज्यादा है तो भगवान को फूलों से सजा देता हूँ। एक दिन में अगरबत्ती का पूरा पैकेट लग जाता है।

काम अच्छा है धार्मिक है। सारा दिन देवता के सामने रहते हैं तभी तो देवता हम पर मेहरबान है। फिर लोग धर्म के नाम पर लाखों करोड़ों के घोटाले करते हैं। तो अगर हम दिन में धर्म के नाम २००-३०० रुपये कमा लेते हैं तो क्या पाप कर लेते हैं। जब ये धंधा अच्छा है तो दूसरा धंधा करने का खतरा क्यों मोल लें?'

'आप अपने निजी जीवन के विषय में कुछ बताएँ।'

'निजी तो जिन्दगी में कुछ भी नहीं। माँ-बाप बचपन में ऊपर चले गए। भाई-बहन कोई था नहीं। शादी नहीं की बीबी बच्चों को रखने के लिए तो पैसा चाहिए। ३०० रुपयों में पूरा हफ्ता गुजारा हो जाता है, शराब की लत होती तो शायद न होता। फिर भी खुश हैं हम,' कहते हुए हरिस्वरूप की आँखों की कोर भीग गई थी।

श्रीनगर में बैठे शनि देवता के रचयिता से बातचीत हुई जिसका नाम अमरसिंह था व आयु ४३ वर्ष थी। 'इस प्रकार पैसा कमाकर क्या आप भगवान को बदनाम नहीं करते? क्या आपको भगवान से डर नहीं लगता?'

'भगवान के नाम पर हम पैसा जरूर माँगते हैं पर भगवान का नाम बदनाम नहीं करते। हमें मालूम है कि हम जनता से पैसे एंठते हैं यह कहकर कि यह मन्दिर में जाएगा पर जाता हमारी जेब में है। लेकिन क्या करें पापी पेट के लिए करते हैं। भगवान से डरते हैं इसलिए चोरी नहीं करते।'

'शनिवार के अतिरिक्त अन्य दिनों में आप क्या करते हैं?'

'सच बताएँ बाकी दिनों में हम दूसरे देवी देवताओं के नाम पर पैसा माँगते हैं। मंगलवार को हनुमान जी के नाम पर, शुक्रवार को संतोषी माता के नाम पर, बृहस्पतिवार को बृहस्पति देवता के साथ रहते हैं। पूरा हफ्ता भगवान के साथ रहकर नाम जपते हैं पैसा भी इकट्ठा करते हैं।'

'आपके परिवार के अन्य सदस्य क्या करते हैं?'

'दो बेटे हैं, बीवी है ये भी ईश्वर की मूर्ति को हाथ में लिए लोगों से पैसा इकट्ठा करते हैं दिन भर घूमकर शाम को सब सदस्य घर आते हैं लगभग तीन चार सौ रुपये हम मिलकर कमा लेते हैं।'

'इन पैसों का क्या करते हैं?'

'भगवान से डरते हैं इसलिए एक दो रुपये चढ़ाकर मन्दिर में माथा टेक देते हैं कुछ पैसा खाने पर लग जाता है कभी एकाध जोड़ी कपड़े सिलवा लेते हैं बाकी पैसा हम बैंक में जमा करा देते हैं। इस समय बैंक में हमारा १ लाख रुपये जमा है। इन पैसों में अपने बेटे को कोई काम शुरु करा दूँगा। आप तो जानते हैं कि आजकल पान-बीड़ी की दो फुट दुकान के लिए भी २-३ लाख रुपये की पगड़ी माँगते हैं। संकट टल जाने पर हम यह काम छोड़ देंगे।'

धौला कुँआ क्षेत्र में शनि देवता के नाम पर भिक्षा माँगने वाली एक २२ वर्षीय लड़की से बातचीत हुई जो मैले कुचैले कपड़ों में दीवार पर बैठी थी और वहाँ से गुजरते लोगों को पैसा फेंकते हुए बड़ी दयनीय दृष्टि से देख रही थी। मैंने पूछा

'आप यह काम किस मजबूरी में करती हैं?' 'मजबूरी है वरना किसी के सामने हाथ फैलाना सबसे गिरा हुआ काम है। कुछ लोग मुझे घूरते हुए निकल जाते हैं और कुछ एक दो रुपया फेंक जाते हैं। शाम तक सौ, सवा सौ रुपये इकट्ठे हो जाते हैं, भाई है- वह भी निकम्मा। अभी कुल १४ वर्ष का है पर उसे नशे की आदत पड़ गई है। मुझसे भी पैसे छीन कर ले जाता है न दूँ तो माँ को तंग करता है। इन्हीं पैसों से रूखी-सूखी प्याज की चटनी संग रोटी खा लेते हैं, सब्जी खाने की तो हमने कभी सोची नहीं। आटा ही १५-२० रुपये किलो है।' 'आप कोई दूसरा काम क्यों नहीं कर लेती?' 'हूंह! एक दिन एक बाबू आया बहुत तरस खाने लगा मुझ पर कहने लगा नौकरी दिलवा दूँगा मैं उसकी बातों में आ गई और उसके साथ चल पड़ी। रास्ते में किसी आदमी से बात करते पता चला कि वह मुझे किसी अड्डे पर ले जाना चाहता था। मैं वहाँ से तुरन्त भाग खड़ी हुई और घर आकर ही दम लिया। फिर एक बार किसी घर में नौकरानी लग गई। एक दिन मालकिन घर में नहीं थी, मालिक थे- उन्होंने छेड़छाड़ शुरू कर दी। वहाँ से भी भागी, औरत हूँ ना.....। इसलिए

यही धंधा ठीक है। भगवान भी मेरी मजबूरी जानता है बुरा नहीं मानता। मुझे याद पड़ता है कि हमारे मामा के घर आज से लगभग १० वर्ष पूर्व एक व्यक्ति सफेद कपड़ों में शनि देवता के नाम पर भीख माँगने आया करता था, पता चला कि आज उसने सौ गज जगह से एक अच्छा खासा मन्दिर बना लिया है। अब वह भिक्षा के लिए द्वार-द्वार नहीं भटकता, मंदिर में सिल्क का कुर्ता पजामा पहने, गले में सोने की भारी चैन, अंगूठी और शानदार विदेशी घड़ी पहने अन्य पंडितों के साथ भजन कीर्तन में लीन रहता है।' यह तो था शनि देवता के रचयिताओं का अपना जीवन। अब आगे देखिये शनि देवता पर शनि मन्दिर में या अन्य स्थानों बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों आदि पर तेल, पैसा, आटा क्यों चढ़ाया जाता है? इनके पीछे क्या कारण बताते हैं ये लोग? कैसे लोगों को छलते हैं? लोगों की क्या मजबूरी है जो इन्हें तेल चढ़ाना पड़ता है? पौराणिक पंडितों के अनुसार शनिवार के दिन शनि देवता की मूर्ति पर तेल चढ़ाने से शनि का दुष्प्रभाव कम होता है, शनिदेवता सताता नहीं अपितु प्रसन्न होता है। आप ही सोचिये इस वैज्ञानिक युग में भी लोग इतने अंधविश्वासी हैं जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। पत्थर की प्रतिमा पर राई का तेल अर्थात् सरसों का तेल चढ़ाना कहाँ की समझदारी है। पहली बात तो शनि ग्रह इतना बड़ा है कि उसकी मूर्ति का निर्माण पृथ्वी पर सम्भव ही नहीं, दूसरी बात

शनि ग्रह गोल है परन्तु लोगों ने शनि की मूर्ति काले पत्थर को तराशकर उसकी आँख, नाक, कान इत्यादि बना रखे हैं। यह काल्पनिक काले पत्थर को शनि मान लेना अज्ञानता को दर्शाता है। जहाँ तक रही तेल चढ़ाने की बात पुराणों में इस विषय में एक कथा प्रचलित है कि हनुमान और शनि की आपस में किसी बात पर लड़ाई हुई और हनुमान जी ने शनि को खूब मारा और हड्डी पसली एक कर दी। जहाँ-जहाँ शनि को चोट लगी वहाँ-वहाँ खरोच आने के कारण लहू बहने लगा। उसे रोकने के लिए लोगों ने राई का तेल लाकर लगाया जिससे घाव भरने लगे। बस यही कारण है कि आज तक शनि के घाव को भरने के लिए राई का तेल का इस्तेमाल करते हैं जिससे घाव भरने लगें, बेचारे शनि देवता के घाव आज तक भी नहीं भर पाए हैं।

शनिग्रह जड़ पदार्थ है और हनुमान जी रामचन्द्र जी के सेवक! भला इनकी आपस में कब भेंट हुई कोई नहीं जानता।

हो सकता है शनि नाम का कोई देवता रहा हो, फिर भी बात बनती नहीं। देवता लोग लड़ते नहीं हैं। हनुमान जी वेदों के बहुत बड़े विद्वान् थे जो रामचन्द्र जी को उनके वनवास में मिले थे। पूरी रामायण में शनि नाम का कहीं उल्लेख नहीं आता। इससे तो यही जाहिर होता है कि यह कहानी बनावटी है।

शनि ग्रह देवता से सभी डरते हैं कि उसकी छाया किसी पर पड़ जाए तो वह व्यक्ति दर-दर की ठोकरें खाता है, भटकता रहता है, एक जगह नहीं रह पाता, देश विदेश की यात्रा करते हुए समय कटता है। अगर ऐसा है तो द्वार-द्वार पर शनि की तस्वीर डोली में लिए तेल माँगने वाले पर तो शनि की छाया का सबसे अधिक प्रकोप है क्योंकि वह बेचारा तो तेल माँगने के लिए द्वार-द्वार भटकता है।

पृथ्वी पर सब ग्रहों का प्रभाव तो पड़ता है परन्तु उन प्रभावों के कारण लोग घर छोड़कर इधर-उधर नहीं भटकते। लोग भटकते हैं, अपने कारणों से। देश-विदेश भ्रमण करते हैं अपने व्यापार के लिए या फिर किसी अन्य कारण से। अगर

शनि-मंगल ग्रह इतने ही बुरे हैं तो क्या ईश्वर ने इनको रचकर गलती की है? इससे तो ऐसा आभास होता है कि ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है या ईश्वर ने जानबूझकर लोगों को दुःखी करने के लिए इन ग्रहों का निर्माण किया है। ये सब पोप लीलाएँ हैं जिनके कारण अपना पेट भरता है। इसके लिए वे वेद मंत्रों का सहारा लेने से भी नहीं चूकते। शनि देवता के लिए

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। (यजुर्वेद ३६/१२) को जोड़ दिया। जबकि इस मंत्र में शनि देवता का कोई जिक्र नहीं है। इस मंत्र का सही अर्थ है 'सबका प्रकाशक सबको आनन्द देने वाला सर्वव्यापक ईश्वर मनोवांछित आनन्द के लिए और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमारे लिए कल्याणकर हो, वह प्रभु हम पर सब ओर से सुखों की वर्षा करें।' वेद मंत्र का चाहे किसी ग्रह से या उसके देवता से लेना देना न हो, इन्हें तो अपना पेट भरने से मतलब है। नाम मंगल व शनि का लेते हैं किन्तु स्वार्थ अपना सिद्ध करते हैं। लेकिन लोग धर्म की आड़ में अपना उल्लू सीधा करने वालों में केवल अपने व अपने परिवारजनों की सुख समृद्धि के लिए फंसते हैं। वे नहीं समझ पाते इनकी मंशा को। आइये! इन ग्रहों के नाम के ही अर्थ पर विचार करते हैं- मंगल का अर्थ है कल्याण करने वाला, मंगल करने वाला, शनि का अर्थ होता है 'शनैश्चर' अर्थात् धीरे चलने वाला' इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जो कुछ कार्य करें सोच समझकर धैर्य से करें, क्योंकि जल्दबाजी में करते हैं तो बिगड़ते हैं। अतः धीरजपूर्वक कार्य करें। रवि सोम-मंगल-बुध-गुरु (बृहस्पति) शुक्र और शनि ये सात ग्रह हैं जिनके नाम से ही सप्ताह में सात दिनों के नाम रखे गए हैं। रवि प्रकाश और प्रेरणा देता है। बुध- सद्बुद्धि धारण करने के लिए शिक्षा देता है। बृहस्पति बड़ा बनने की प्रेरणा देता है। शुक्र -शुद्ध पवित्रता का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देता है। शनि धीर गंभीर बनने की प्रेरणा देता है।

अब विद्वद्जन देखें कि कौन सा ग्रह अच्छा है और कौन सा बुरा है। प्रभु की असीम कृपा है कि इन ग्रहों-उपग्रहों के आकर्षण के कारण ही हमारी पृथ्वी आकाश में स्थित है। जितने भी ग्रह-उपग्रह हैं ईश्वर ने जीवों की सुरक्षा के लिए ही बनाए हैं। मनुष्य सर्वश्रेष्ठ योनि है, अतः इन ग्रहों से बहुत कुछ सीख सकता है, उनसे प्रेरणा पा सकता है। उनकी गति देखकर अपनी गति को व्यवस्थित कर सकता है। ग्रहों से वैर करना या उनको बुरा भला कहना मनुष्य को शोभा नहीं देता। मनुष्य चेतन है और ये सभी ग्रह जड़ हैं। हमारे लिए जो पूज्य देवता है वह ईश्वर है। परमपिता परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना-उपासना ही सच्चे मन से करनी चाहिए, उसी में हम सब की भलाई है, उसी में हम सबका सुख निहित है। आजकल बाजार में शनि देवता का एक नया चित्र देखने को मिलता है जिसमें शनि देवता का रथ कौआ खींचता हुआ दिखाई पड़ता है। क्या वास्तव में ऐसा हो सकता है कि इतने बड़े देवता का रथ आकाश में उड़ने वाला एक छोटा सा पक्षी खींचता हो? इसमें कितनी वास्तविकता है ये तो पाठकगण स्वयं भी समझ सकते हैं। लेकिन जिन्होंने कसम ही खा ली है कि अंधविश्वास, पाखण्ड, अज्ञान व कल्पनाओं से कभी बाहर नहीं निकलेंगे उन्हें सत्य, सरल व सीधी बातें अनर्गल प्रलाप ही नजर आती हैं। उनकी नजर में शनि देवता का वाहन कौआ खीचे तो वह धर्म है और यदि कोई प्रश्न कर दे कि भैया! कौआ तो उड़ने वाला पक्षी है इसे घोड़े की तरह मत दौड़ाओ, इसे उड़ाओ तो इसे अंधविश्वासी लोग प्रश्न कर्त्ता का अनर्गल प्रलाप बताते हैं। जरा विचार करो कि इस प्रश्न में प्रश्न कर्त्ता ने क्या गलत कहा? कौआ वास्तव में क्या पक्षी नहीं है? घोड़ा है जो रथ खींचने का काम 'शनि देवता' उससे करवा रहे है? क्या 'शनि देवता' के राज में सभी पशुओं का प्रलय हो गया था जो रथ खिचवाने के लिए एक छोटे से पक्षी का सहारा लेना पड़ा? क्या इतने बड़े रथ को एक छोटा सा पक्षी खींच सकता है? क्या यह बात आपको विश्वास करने योग्य लगती है? पाठकगण स्वयं ही विचार करें।

शनि देवता का मन्दिर महाराष्ट्र में शिरड़ी के सांई बाबा मंदिर से ८० किलोमीटर की दूरी पर अहमदनगर के रास्ते पर बनाया गया है। गाँव का नाम शिगणापुर है जो 'शनि शिगणापुर' के नाम से आजकल प्रसिद्ध हो गया है।

मन्दिर खुले में है तथा काले पत्थर को तराशकर चार-पाँच फुट ऊँचे स्थान पर रखा है। लोग यहाँ राई का तेल चढ़ाने आते हैं। काले पत्थर पर तेल चढ़ाते हैं- तेल बहकर पृथ्वी में चला जाता है। फर्श पर तेल होने से फिसलन होती है। केवल पुरुष लोग ही उस पर तेल चढ़ा सकते हैं। स्त्रियों को मना है। स्त्रियाँ दूर से ही देखती हैं। हो सकता है स्त्रियाँ तेल के फर्श पर फिसलीं होंगी तथा उनके तन पर कपड़े टिक नहीं सके होंगे या उनका मजाक बन गया होगा जिससे स्त्री जाति का अपमान हुआ होगा अब वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने सख्त मनाही कर रखी है कि केवल पुरुष ही उस शनि के पत्थर पर तेल

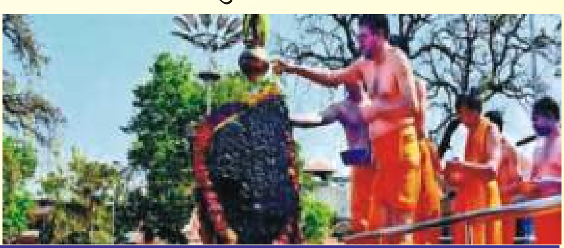

चढ़ाने के लिए तीन चार सीढ़ियाँ चढ़कर संभल संभलकर आ जा सकते हैं। पुरुषों को नहाकर तथा केवल पीले भगवे रंग की धोती पहनकर ही अभिषेक करने का अधिकार है। अभिषेक के लिए फल, काला रुमाल, तेल की शीशी से भरी थालियाँ बिकती हैं। नारियल को श्रद्धालु भक्त स्वयं साथ ले जाते हैं। इस गाँव में केवल इस शनि देवता के मन्दिर के सिवाय कुछ भी नहीं है। अतः जो दुकानें हैं वे सब फूल और तेल की हैं तो बिना ताला लगाए ही खुली रहती हैं। वैसे भी चोरी का भय तो हो ही नहीं सकता। कहते हैं यहाँ चोरी नहीं होती, और हो भी कैसे सकती है, जो लोग यहाँ आते हैं अपनी गाड़ियों को बन्द करके ही पत्थर के शनि पर तेल चढ़ाने जाते हैं। यहाँ शनि के काले पत्थर का फोटो उतारना मना है। यहाँ भी माँगने वालों की कोई कमी नहीं। खाने-पीने के लिए कुछ दुकानें हैं। तीन चार एकड़ की जगह में ही यह शनि देवता की तीर्थ नगरी बनी है।

विद्वद्‌जन समझ गए होंगे कि कितना अन्धविश्वास हमारे देश में फैलता जा रहा है। काले पत्थर की शिला (४-५ फुट ऊँची, ३ फुट लम्बी और एक फुट चौड़ी) को किसी शिल्पकार ने तराशकर रखा है। उस पर पानी चढ़ाओ या तेल या फिर कोई अन्य द्रव्य उसे क्या पता चलता है? भावना कैसी भी हो, परन्तु भावना से जड़ कभी चेतन नहीं हो सकता। व्यर्थ में रोज न जाने कितना राई का तेल नष्ट किया जाता है। फूल अगरबत्ती और काला कपड़ा बेकार में वायुमण्डल को दूषित करते रहते हैं। शनि ग्रह जो हमारी पृथ्वी से लाखों गुणा बड़ा है उसे इस काले पत्थर में आँख, नाक बनाकर सीमित रखना कहाँ की समझदारी है? क्या केवल तेल डालने से शनि ग्रह शान्त हो जायेगा? या काला कपड़ा देने से किसी की नजर नहीं लगेगी? वातावरण को दूषित करने से क्या ये जड़ देवता प्रसन्न होंगे? पत्थरों को मानते मानते लगता है लोगों के मस्तिष्क में पत्थर घुस गए हैं। जो लोग वहाँ फर्श पर गिरते हैं- हड्डियाँ तुड़वा आते हैं- अपने हाथ-पाँव तोड़ आते हैं- तो क्या इनके कर्म ऐसे थे?

मनुष्य योनि प्राप्त करना तो सौभाग्य की बात है। न जाने कितने पूर्वजन्म जन्मान्तरों के शुभ कर्मों के फलस्वरूप यह मनुष्य देह मिली है। इसे इस प्रकार पाषाणों की पूजा में लगाकर व्यर्थ में क्यों गवाएँ? जड़ की पूजा से उसका गुण 'जड़ता' (विचार-शून्यता) ही प्राप्त होता है। और (परमात्मा) की पूजा से उसका गुण आनन्द ही प्राप्त होता है आत्मा चेतन है और परमात्मा भी चेतन है, अतः इन दोनों का मिलाप (योग) होना सम्भव है। जड़ और चेतन का योग नहीं हो सकता। भावना शुद्ध पवित्र होने से जड़ चेतन नहीं बनता-यही प्रकृति का नियम है। यही विधि का विधान है।

- श्री गंगाशरण आर्य
शाहबाद मोहम्दपुर, दिल्ली

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

It is indeed a great opportunity to visit the ashram of Aryasamaj and revisit the thoughts of Swami DayanandSaraswatiji for social changes and making a society full of scientific thoughts. Thanks for our brothers particularly to Shri VinodRathode.
- Rajat Kumar Das, Secretary General National Federation of SBI SC/ST

यहाँ आकर बहुत ही गर्व हुआ, सब कुछ अद्‌भुत था। स्वामी दयानन्द जी एवं आर्यसमाज के प्रति आस्था और उद्‌बुद्ध हुयी।
- चेतन चौहान, शालिनी, बुलन्दशहर, खुर्जा

यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा बहुत सी ऐसी बातों के बारे में जानकारी मिली जिनके बारे में अभी तक अनजान थी। निश्चित ही यहाँ आकर हमारे ज्ञान में वृद्धि हुयी।
- हेमवती

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत देश के महान् पुरुषों में हैं। उनकी गाथा सदा आनेवाले युगों में प्रेरणा देती रहेगी।
- भँवर लाल एम. रॉय, डिशा, गुजरात

महर्षि दयानन्द ने क्या दिया? और क्या किया?

इस विषय में जितना भी लिखा जाए थोड़ा है तथापि हम संक्षेप में ठोस सामग्री देने का प्रयास करेंगे। आधुनिक भारत के एक प्रसिद्ध इतिहासकार श्री ईश्वरीप्रसाद ने 'सरस्वती' मासिक के सन् १९२९ के एक अंक में अपने एक पठनीय लेख में लिखा था- 'हिन्दूसमाज में स्वामीजी ने हलचल मचा दी। अदम्य निर्भीकता के साथ उन्होंने स्वेच्छाचारी, निरंकुश 'पोपों' का सामना किया और काशी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में अपनी विद्वता का सिक्का जमा दिया। आर्यसमाज के विस्तृत कार्यक्रम ने हिन्दू जाति की मृत हड्डियों में फिर से जान डाल दी। राष्ट्रीय आन्दोलन का अभी नामो-निशान नहीं था। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध किसी को ताब न थी कि जबान निकाले। आजकल के युवकों के लिए उस परिस्थिति को समझना दुष्कर है।'

यशस्वी इतिहासकार श्रीयुत् काशी प्रसाद जायसवाल जी ने लिखा है- "The Sanyasi Dayanand gave freedom to the soul of the Hindus, as did Luther unto the Europeans". अर्थात् संन्यासी दयानन्द ने हिन्दुओं की आत्मा को ऐसे ही स्वतन्त्र करवाया जैसे योरोपियन लोगों को लूथर ने।' ऋषि दयानन्द ने देखा

कि भारतीय साधुओं को केवल अपने मोक्ष की ही चिन्ता है। वे संसार से उदासीन रहने को ही वैराग्य, भक्ति की पराकाष्ठा व सन्तपना जानते व मानते थे।

'कोई नृप होय हमें क्या हानि'

'कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास।
जो करनगे सो भरन गे तू क्यों भयो उदास।'

जहाँ देश के विचारकों की, महात्माओं की ऐसी सोच हो वहाँ देशोन्नति व विकास कैसे सम्भव है? ऋषि का घोष था कि मुझे अपनी मुक्ति की चिन्ता नहीं, मैं करोड़ों देशवासियों के बन्धन काटने आया हूँ।

ऋषि की इस सोच ने युग बदल दिया। स्वामी अनुभवानन्द जी आर्य संन्यासी को जलियाँवाला हत्याकाण्ड में फांसी का दण्ड सुनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द ने संगीनों से सीना अड़ाकर शूरता का गान किया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने सिर पर कुल्हाड़े के वार सहे। परहित जीने-मरने का पाठ आर्यों ने ऋषि का अनुसरण करके सीखा-

'पराई आग में जलना मरीजों की दवा होना।
कोई सीखे दयानन्द से धर्म पर जाँ फिदा करना।।'

महर्षि दयानन्द ने धर्म को कर्म का रूप दिया। ईश्वर आत्मबल का देनेवाला है यह कहने वाले तो बहुत हैं, पर ऋषि ने इस आत्मबल का परिचय पग-पग पर दिया। उनके शिष्यों पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी ने अपने आचार्य से ये गुण ग्रहण कर नया इतिहास लिख दिया।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रख्यात् इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार ने ऋषि दयानन्द की देन या उपलब्धि पर बड़े सुन्दर शब्दों में लिखा था- "Today

Hinduism calls upon it as its best ally. Today Hinduism has paid the Arya samaj the highest tribute, that of imitation by stealing its program."

'अर्थात् आज हिन्दू समाज अपने आपको आर्यसमाज का सर्वोत्तम सहयोगी कहता। आज हिन्दू समाज ने आर्यसमाज के कार्यक्रम व मान्यताओं का अनुकरण करके इसके कार्यक्रम को चुराकर इसे सबसे उत्तम श्रद्धा पुष्प अर्पित किया है।' क्या ये सत्य नही है?

आज अस्पृश्यता का समर्थन करने का साहस किसे है? आज

बालविवाह, अनमेल विवाह का पोषक और विधवा विवाह का विरोधी कौन है? मूर्ति में भगवान है यह तो कहते हैं, मूर्ति भगवान है, यह सिद्ध करने वाला कौन है? सागर पार जाना पाप नहीं रहा। यह उस ऋषि का प्रताप है। मायावादी हिन्दू कहते चले आ रहे थे कि सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म है, जगत् मिथ्या है, यह सब जो दिखता है स्वप्नवत् है 'स्वप्न तो सोने वालों को आते हैं। सोने वाले संसार का क्या भला कर सकते हैं? जगत् को मिथ्या मानने वालों से इसके विकास, उन्नत्ति व सुधार का प्रश्न ही नही उठता।

परन्तु महर्षि दयानन्द ने यथार्थ दर्शन दिया- "He has given us a bold philosophy of life. A philosophy of the reality of God, reality of man and the reality of the universe in which man has to live in. अर्थात् ऋषि ने हमें वीरोचित दर्शन दिया। ईश्वर की वास्तविकता (सत्ता) का दर्शन दिया, उसने मनुष्य की सत्ता की सच्चाई तथा उस विश्व की वास्तविकता का दर्शन दिया जिसमें मनुष्य को रहना है।' "His is a philosophy of bold actions and not of idle musings." उस ऋषि का दर्शन साहसिक कार्यों का दर्शन है न कि निठल्ले चिन्तन का।

निर्भीक सत्यवाणी- अंग्रेजी राज आया। 'अंग्रेजी राज की बरकतें' (Blessings) यह पाठ स्कूलों, कालेजों में पढ़ाया जाता था। गाँधी जैसे लोग प्रथम विश्वयुद्ध तक अंग्रेज जाति के न्याय, न्यायपालिका की भूरि-भूरि प्रशंसा किया करते थे। वहीं ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के तेहरवें समुल्लास में अंग्रेजी न्यायपालिका की निष्पक्षता व न्याय की धज्जियाँ उड़ाकर रख दीं। {अनुमान होता है इसी से ईसाई लोग ईसाईयों का बहुत पक्षपात कर किसी गोरे ने काले को मार दिया हो तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कर छोड़ देते हैं। (सत्यार्थप्रकाश-१३वाँ समुल्लास, समीक्षा क्र. ८०)}। महर्षि सन् १८७७ में जालन्धर पधारे तब आपने एक दिन कहा- 'आजकल के राजा न्याय नहीं प्रत्युत् अन्याय करते हैं। अंग्रेज लोग अपने मनुष्यों पर अत्यधिक कृपादृष्टि रखते हैं। यदि कोई गोरा अथवा अंग्रेज किसी देशी की हत्या कर दे तथा वह (हत्यारा) न्यायालय में कह दे कि मैंने मद्यपान कर रखा था तो उसको छोड़ देते हैं।' राजा राममोहनराय से लेकर स्वामी विवेकानन्द तक कोई भी सुधारक, विचारक, महात्मा इस निर्भीकता का परिचय न दे सका, ऋषि की इसी निर्भीकता ने बिस्मिल, रोशन, अशफाक, भगत सिंह जैसे प्राणवीरों की छातियों को गर्मा दिया।

ऋषि दयानन्द की विश्व को देन समझने के लिए पाठक यह ध्यान दें कि पूरे विश्व में यह प्रचार होता रहा है कि अल्लाह या God ने 'हो जा' कहा, और सब कुछ हो गया। सात दिन में सृष्टि बन गयी। सात दिन में तो टमाटर, मेथी, प्याज, मिर्ची आदि नही उगते। माता के गर्भ से बालक को जन्मने में भी नौ माह लगते हैं। सृष्टि का सृजन सात दिन में हो गया- कितना हास्यास्पद कथन है! लेकिन आज पूरा विश्व ऋषि की वाणी के साथ मानता है- 'Matter can neither be created nor it can be destroyed' अर्थात् प्रकृति न उत्पन्न की जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है। यह अनादि अनन्त है। महर्षि दयानन्द ने जो किया व जो दिया वह सबके सामने है और सबको मान्य हो रहा है।

इतिहासकार श्री काशीप्रसाद जायसवाल की ये पंक्तियाँ इतिहास का निचोड़ है- "In nineteenth century there was nowhere else such a powerfull teacher of monotheism, such a preacher of the unity of man, such a successful crusader against capitalism in spirituality" अर्थात् उन्नीसवीं शताब्दी में धराधाम पर एकेश्वरवाद का ऐसा महाप्रतापी सन्देश वाहक गुरु कोई नहीं हुआ, मानवीय एकता का ऐसा प्रचारक तथा आध्यात्मिक जगत् में पूंजीवाद के विरुद्ध लड़ने वाला कोई ऐसा धर्मयोद्धा नहीं हुआ (जैसा कि स्वामी दयानन्द था)।

जुग बीत गया दीन की शमशीर जनी का।
है वक्त दयानन्द शजाअत के धनी का।।

आर्यों को नमन

आर्यों के बारे में,
जितना बोलो कम है।
वैदिक धर्म का परचम,
लहराने का इनमें दम है ।
धर्म से जब दूर हुए लोग,
अंधेरा सब ओर छाया है
यज्ञ करने का असली ढंग,
इन्होंने ही तो सिखाया है।
हँसते–हँसते जीवन, देश धर्म पर,
कुर्बान करना इनको बहुत भाता है।
और पूरी निष्ठा से राष्ट्र सेवा का,
फार्मूला इनको आता है।
सारा विश्व जब अंधकार में डूबा,
पाखण्ड से कर लिया नाता है ।
वेदों का डंका बजाकर,
सारे विश्व को ये जगाता है ।
दुनिया के हर कोने में इन्होंने,
अपना परचम फहराया है।
राष्ट्रसेवा का असली मतलब,
इन्होंने ही सबको समझाया है।
धर्म की आड़ में गलत लोग,
जब पाखण्ड खूब फैलाते हैं ।
ढोंगियों को ललकार कर ये,
शास्त्रार्थ खूब करवाते हैं ।
देश धर्म की खातिर जहर,
फांसी और चाकू इन्होंने खाया है ।
वैदिक धर्म की सेवा में,
हौंसला नहीं इन्होंने गवांया है ।
धर्म और शिक्षा के लिए इन्होंने,
गुरुकुलों को बहुत बनाया है ।
श्रद्धानन्द, गुरुदत्त और लेखराम,
को कौन भूल पाया है ।
स्त्रियों को शिक्षा, दलितों को,
इन्होंने गले लगाया है ।
लाखों लोगों को धर्म वापसी का,
शुद्धि आन्दोलन इन्होंने चलाया है ।
देश की रक्षा के लिए,
बलिदान इन्होंने पाया है ।
देश आजादी का आन्दोलन,
इन्होंने ही तो चलाया है ।
लाखों आर्य बलिदान हुए पर,
कदम ना पीछे हटाया है ।
लाजपतराय, भगतसिंह, आजाद, बिस्मिल,
को कौन भूल पाया है।
लड़े विदेशी संस्कृति से,
धर्म को इन्होंने बचाया है।
हैदराबाद के निजाम को,
स्वामी स्वंत्रानन्द जी ने ही तो झुकाया है।
गऊओं की रक्षा का,
आन्दोलन इन्होंने चलाया है ।
देश की पहली गौशाला को,
इन्होंने ही तो खुलवाया है ।
लाखों क्रान्तिकारियों को तैयार किया,
जिसने, गुरु विरजानन्द का प्यारा है ।
वो है दयानन्द जिसने हँस कर,
सारा जीवन देश धर्म पर वारा है।
बारम्बार प्रणाम कर,
सुमित गीत इनके गाता है ।
आर्यों के बलिदान के बारे में,
तनिक भर भी नही लिख पाता है ।

लेखक–सुमित कुमार

श्रीराम नवमी के पावन अवसर पर
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश
न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ
परिवार की ओर से सभी को
हार्दिक शुभकामनाएँ ।

दीनदयाल गुप्त
न्यासी

जब मैं पूछता हूँ कि धन व ऋण वैद्युत आवेशयुक्त कणों के परस्पर निकट आते ही Virtual Particle कहाँ से व क्यों प्रकट हो जाते हैं? तब वैज्ञानिक उत्तर देते हैं कि इसका उत्तर हम नहीं जानते। जहाँ वर्तमान विज्ञान के पास उत्तर नहीं मिलता, वहाँ वैदिक विज्ञान वा दर्शन उत्तर देता है। यह उत्तर वैदिक ऋषियों वा वेद के महान् विज्ञान से मिलेगा, जिसे हम किसी पृथक् पुस्तक में स्पष्ट करेंगे। यहाँ हम कहना यह चाहते हैं कि वर्तमान विज्ञान किसी बल के कार्य करने की प्रक्रिया को बतलाता है, जबकि वैदिक विज्ञान किंवा दर्शन उसके आगे जाकर यह बतलाते हैं कि वह बल की प्रक्रिया क्यों हो रही है और मूल प्रेरक बल क्या है? वहाँ हम यह सिद्ध करेंगे कि सभी जड़ बलों का मूल प्रेरक बल चेतन परमात्म तत्व का बल है। यहाँ वर्तमान विज्ञान न तो हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है और न ईश्वर तत्व के मूल प्रेरक बल की सत्ता को ही स्वीकार करता है। यह दुराग्रह किसी भी वैज्ञानिक के लिए उचित नहीं है। उसे या तो समस्याओं का समाधान करना चाहिये अथवा वैदिक वैज्ञानिकों से समाधान पूछना चाहिए।

यहाँ हम चर्चा कर रहे थे कि ब्रह्माण्ड में आधुनिक विज्ञान द्वारा माने व जाने जाने वाले मूलकण अनादि नहीं हो सकते और तब उनमें होने वाली किसी भी प्रकार की क्रिया वा गति भी अनादि नहीं हो सकती। यदि कोई यह हठ करे कि मान लीजिये कि मूलकण प्राणादि सूक्ष्म पदार्थ वा प्रकृति रूप सूक्ष्मतम पदार्थ से बने हैं, तब भी उस सूक्ष्म वा सूक्ष्मतम कारण पदार्थ में गति अनादि क्यों नहीं हो सकती? क्यों इसके लिए चेतन ईश्वर तत्व की आवश्यकता होती है?

इस विषय पर हम इस प्रकार विचार करते हैं-

इस सृष्टि में जो भी गति एवं बल का अस्तित्व है, वह पदार्थ की सूक्ष्मतम अवस्था तक प्रभावी होता है। पदार्थ के अणुओं में होने वाली कोई भी क्रिया, बल आदि का प्रभाव उसमें विद्यमान आयन्स तक होता है। आयन्स में होने वाली प्रत्येक गति व बल आदि का प्रभाव वा सम्बन्ध इलेक्ट्रॉन्स, प्रोटोन्स, न्यूट्रॉन्स वा क्वार्स व ग्लूऑन्स तक होता है। हमारा विश्वास है कि वर्तमान विज्ञान भी इसे मिथ्या नहीं कहेगा। इन सूक्ष्म कणों की संरचना व स्वरूप के विषय में वर्तमान विज्ञान अनभिज्ञ है, इस कारण इनमें होने वाली गति, क्रिया, बल आदि के प्रभाव की व्यापकता के विषय में वह अनभिज्ञ है। यह प्रभाव प्राण, मन व वाक् तत्वों तक व्याप्त होता है, जो मूल प्रकृति व ईश्वर में समाप्त हो जाता है। वस्तुतः ईश्वर तत्व में कोई क्रिया नहीं होती और प्रकृति में क्रिया ईश्वरीय प्रेरणा से होती है, परन्तु उससे प्रकृति का मूल स्वरूप परिवर्तित हो जाता है। यह सब ज्ञान वर्तमान विज्ञान या तकनीक के द्वारा होना सम्भव नहीं है। गति व बल की व्याप्ति के पश्चात् हम यह भी विचार करें कि इस ब्रह्माण्ड में हो रही प्रत्येक क्रिया अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से हो रही है। समस्त सृष्टि अनायास किसी क्रिया का परिणाम नहीं है, बल्कि प्रत्येक क्रिया अत्यन्त व्यवस्थित व विशेष प्रयोजनानुसार हो रही है। मूलकण, क्वाण्टा आदि सूक्ष्म पदार्थ किंवा विभिन्न विशाल लोक लोकान्तर आदि पदार्थ जड़ होने से न तो बुद्धिमत्तापूर्ण क्रियाएँ कर सकते हैं और न वे अपनी क्रियाओं का प्रयोजन ही समझ सकते हैं।

क्रमशः......

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु
श्री वेदप्रकाश आर्य, नई दिल्ली ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है।
अनेकशः धन्यवाद।
- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष

आर्यसमाज की स्थापना क्यों की गई थी?

आर्यसमाज देश का धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीयता का पोषक, अविद्या को दूर कर विद्या वृद्धि करने वाला अनेक गुणों से सम्पन्न एक वैश्विक संगठन है। आर्यसमाज की स्थापना इसके संस्थापक वेदों के महान् विद्वान् ऋषि दयानन्द सरस्वती ने १० अप्रैल, सन् १८७५ को मुम्बई में की थी। इसका उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं पर आधारित स्वरूप व सत्ता वाले ईश्वर द्वारा प्रदत्त सत्यधर्म के मूल वेदज्ञान का प्रचार करना रहा है। देश व संसार से अविद्या, अन्धविश्वास, कुरीतियाँ, सामाजिक असमानता एवं सभी सामाजिक बुराईयों को हटाकर विद्या पर आधारित सत्य मान्यताओं का प्रचार कर देश-विदेश के लोगों को ज्ञानी बनाना व देश व समाज के प्रति उनमें कर्तव्यों का बोध कराकर उन भावनाओं को सुदृढ़ करना भी आर्यसमाज का उद्देश्य रहा है। आर्यसमाज ने अपनी स्थापना के विगत १४३ वर्षों में उल्लेखनीय व प्रशंसनीय कार्य किये हैं। पूरे विश्व व सभी मत-मतान्तरों पर आर्यसमाज के सिद्धान्तों व कार्यों का प्रभाव पड़ा है। जो कार्य हुआ है उसका प्रभाव लक्ष्य की तुलना में नगण्य कह सकते हैं परन्तु वह नगण्य नहीं है। कुछ बीज ऐसे होते हैं जो कुछ ही समय में अंकुरित होकर फल देने वाले होते हैं और कुछ पल्लवित होने में बहुत समय लेते हैं। विश्व व देश की कुल आबादी में यदि वेद वा आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानने व उस पर चलने वाले मुनष्यों की गणना करें तो वह नगण्य प्रतीत होती है। परन्तु ऐसा हो सकता है कि आने वाले समय में इस कार्य से विश्व में क्रान्ति उत्पन्न हो और इस किये गये कार्य से महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार हो जाये। ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने कौन-कौन से प्रमुख कार्य किये हैं, इस पर एक दृष्टि डालते हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज स्थापित कर विश्व में वेदों का पुनरुद्धार किया है। ऋषि दयानन्द के समय में लोग वेदों के नाम को तो कुछ-कुछ जानते थे परन्तु उस समय वेद कहीं सुलभ नहीं थे। विद्वत् जगत् में यहाँ तक कहा जाता था कि शंकासुर या भस्मासुर वेदों को पाताल लोक में ले गया है। ऋषि दयानन्द ने अपने प्रयत्नों से वेदों की मूल संहिताओं को प्राप्त किया। उन्होंने वेद मन्त्रों के पदच्छेद कर उन पदों के अर्थ सहित पदार्थ प्रस्तुत करके मन्त्रों का भावार्थ संस्कृत व आर्यभाषा हिन्दी में किया है। इससे यह लाभ होता है कि देवनागरी व हिन्दी जानने वाला एक सामान्य मनुष्य भी वेदों का अध्ययन करने में समर्थ होता है। इससे ब्राह्मणों व पण्डितों का एकाधिकार भी समाप्त हुआ है जो वेदों व उसकी व्यवस्थाओं के नाम पर इसका दुरुपयोग करते थे। आज **हम जैसे लाखों लोग वेदों का अध्ययन कर लाभान्वित हो रहे हैं। महाभारत से लेकर ऋषि दयानन्द के समय तक सामान्य मनुष्य को इस प्रकार की सुविधा नहीं थी। यदि वेदाध्ययन की सुविधा होती तो देश में अविद्या का अन्धकार न फैलता, न ही देश में अन्धविश्वास उत्पन्न होते और न ही देश पराधीन हुआ होता। विश्व में अविद्या के कारण जो मत-मतान्तर उत्पन्न हुए हैं वह भी न होते। महाभारत के बाद से वेद केवल कुछ चुने हुए पण्डितों वा ब्राह्मणों की निजी सम्पदा बने हुए थे जबकि वेदों पर सब मनुष्यों का समान अधिकार था। देश के ब्राह्मण वर्ग ने भी वेदों के अध्ययन को तिलांजलि दे दी थी। वह न तो वेदों का अध्ययन करते थे और न वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थ ही जानते थे, उनका वेदानुसार आचरण करना तो बहुत दूर की बात थी। आर्यसमाज के एक विद्वान्**

पं. भारतेन्द्र नाथ, जो वानप्रस्थी होकर महात्मा वेदभिक्षु जी के नाम से विख्यात् हैं, उन्होंने वेदों को हिन्दुओं के घर-घर में पहुंचाने का शुभ संकल्प लिया था। उन्होंने ऋषि दयानन्द और आर्य विद्वानों का वेदों का हिन्दी भाष्य प्रकाशित किया और उसे घर-घर पहुँचाने का प्रयत्न किया। अन्य वैदिक साहित्य का प्रकाशन भी उन्होंने किया है। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज समाज की कृपा से वेदों के सत्य अर्थों से युक्त वेदभाष्य आज सर्वसाधारण को सुलभ हैं। यह ऋषि दयानन्द की देश, समाज और विश्व को बहुत बड़ी देन है। वेदों के प्रचार से लोगों को ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति, कारण व कार्य, का ज्ञान हुआ है और इसी से ईश्वर की सत्य उपासना का ज्ञान व महत्व भी लोगों को हुआ।

वेद प्रचार का मुख्य प्रयोजन अविद्या के नाश सहित देश व समाज से अज्ञानता पर आधारित अन्धविश्वासों, मिथ्याचरण, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं, आडम्बरों तथा समाज को कमजोर करने वाले कार्यकलापों को समाप्त करना था। अन्धविश्वासों के शीर्ष स्थान पर अवतारवाद की मिथ्या अवधारणा, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष व मृतक श्राद्ध आदि प्रमुख हैं। आर्यसमाज ने इन सब अन्धविश्वासों को तर्क व युक्ति के साथ वेद के प्रमाणों से भी खण्डित किया है। देश की बहुत बड़ी संख्या ने आर्यसमाज की मान्यताओं व सिद्धान्तों को अपनाया है। मूर्तिपूजा को ईश्वर प्राप्ति का साधन माना जाता है जबकि मूर्तिपूजा से यह उद्देश्य पूरा नहीं होता। ईश्वर की पूजा का अर्थ ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप विषयक सत्य ज्ञान को प्राप्त होना एवं उस ज्ञान के अनुरूप ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करना होता है। इसके लिये सहस्रों वर्ष पूर्व महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन का प्रणयन किया था। उपासना का यही प्रमुख ग्रन्थ है और योगदर्शन वर्णित अष्टांगयोग यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि से ही मनुष्य ज्ञानवान होकर ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। इसकी अन्य विधि नहीं है। उपासना में स्वाध्याय व अध्ययन, सच्चे गुरुओं व विद्वानों की संगति, यम-नियम-आसन-प्राणायाम आदि का सेवन तथा प्रत्याहार-धारणा व ध्यान का अभ्यास आवश्यक होता है। आर्यसमाज जड़ मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा के सिद्धान्त व विधि को भी स्वीकार नहीं करता। यदि मन्त्रोच्चार से जड़-मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है तो मृतक शरीर में भी उन्हीं मन्त्रों से मृतक शरीर को जीवित हो जाना चाहिये। ऐसा नहीं होता, अतः प्राण प्रतिष्ठा जिस उद्देश्य से की जाती है वह पूरा होता है, यह स्वीकार नहीं किया जा सकता। हम समझते हैं कि जो लोग इन बातों को करते हैं वह कभी यह विचार नहीं करते कि क्या उनका कार्य सत्य व उचित है या नहीं?

आर्यसमाज ने समाज से अन्धविश्वासों को दूर कर सामाजिक व्यवस्थाओं को भी सत्य व ज्ञान के आधार पर स्थापित करने का प्रयास किया है। आर्यसमाज ने समाज से बाल-विवाह व बेमेल विवाह का अन्त करने में सफलता प्राप्त की है। कम आयु की विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत व प्रचार भी आर्यसमाज ने अपने आरम्भ काल से ही किया है। विवाह ब्रह्मचर्ययुक्त स्वस्थ युवक व युवती का पूर्ण युवावस्था में गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार ही होना चाहिये, इसका लिखित व मौखिक प्रचार भी आर्यसमाज ने किया है। विवाह में जन्मना जाति का परित्याग कर वैदिक धर्म के ही अनुयायियों में गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार विवाह-सम्बन्ध

देश, समाज व भावी पति-पत्नी व उनके परिवारों के हित में होता है। इसको आज सारा संसार स्वीकार करता है।

आर्यसमाज ने गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था का भी ज्ञान, तर्क व युक्तियों के आधार पर प्रचार किया। वर्तमान समय में जो सरकारी नियम आदि बने हैं उसमें इसका कुछ कुछ रूप देखा जा सकता है। हाईस्कूल पास सब जातियों के बच्चों का स्तर सरकारी नियमों में समान माना जाता है। यदि कहीं सरकारी पद हाईस्कूल के बच्चों से भरना होता है तो वहाँ जन्मना जाति का महत्व न होकर अभ्यर्थी की योग्यता अर्थात् गुण-कर्म व स्वभाव को ही देखा जाता है। इसी प्रकार सर्वत्र नियुक्तियाँ होती हैं। आर्यसमाज की बात को लोगों ने माना नहीं अन्यथा अब तक हिन्दू समाज से जन्मना जातिवाद समाप्त हो जाना चाहिये था। इसके सुपरिणामों की हम कल्पना ही कर सकते हैं। जन्मना जातिवाद ने देश व समाज को बहुत कमजोर किया है और अनेक समस्याओं को जन्म भी दिया है। हिन्दू समाज जितना जल्दी इस व्यवस्था का त्याग कर दे उतना ही अच्छा

है, अन्यथा इसके परिणाम बहुत भयंकर रूप से सामने आ रहे हैं और आने वाले दिनों में आयेंगे। हमें उन परिणामों की कल्पना करके भी डर लगता है। आर्यसमाज ने देश व समाज

से अशिक्षा को दूर करने के लिये गुरुकल व स्कूलों का संचालन कर भी देश व समाज को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आर्यसमाज का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य शुद्धि का कार्य है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम जी तथा पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी आदि ने इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी कारण हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं. लेखरामजी सहित महाशय राजपाल जी आदि का बलिदान देना पड़ा है। विधर्मियों ने इन महापुरुषों से द्वेष किया और इनकी हत्या कर दी। वह लोग स्वयं तो हिन्दुओं को मनुष्य भी नहीं मानते और इनका धर्मान्तरण करते हैं परन्तु जब हमारे विद्वान् व नेता अपने बिछुड़े हुए भाईयों की उन्नति के लिए उन्हें अपने साथ मिलाते हैं, तो इसका विरोध किया जाता है। यह संविधान प्रदत्त शुद्धि के अधिकारों के प्रति उनके दोहरे मापदण्ड हैं।

हमने आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य व उसके कुछ थोड़े से कार्यों का उल्लेख यहाँ नमूने के रूप में किया है। आर्यसमाज का वेदोद्धार, शिक्षा, अन्धविश्वास उन्मूलन, समाज सुधार, देश की आजादी, देश की सर्वविध उन्नति तथा स्त्री-शूद्रों को वेदाधिकार आदि में सर्वाधिक योगदान है। देश का हित आर्यसमाज की विचारधारा को अपनाकर ही हो सकता है। सारा संसार ऋषि दयानन्द का उनके कार्यों के लिये ऋणी है। आज के सभी लोग भले ही उनके ऋण को न समझें, परन्तु भविष्य में ज्ञान-विज्ञान पर आधारित ऐसे समाज में, जिसमें अन्धविश्वासों की प्रतिष्ठा नहीं होगी, तब ऋषि दयानन्द को ही सबसे बड़ा महापुरुष व महामानव माना जायेगा, ऐसा हमारा अनुमान है। ओ३म् शम्।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला- २, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ख १	■	२	र्य २	■	३	र ३	३	■
■	४	ष्टि ४	■	■	५	हत् ५	५	त्व ५	■
६	म ६	६	ल ६	■	७ नि	७	■	८	हीं ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अन्धों के पीछे अन्धे चलें तो क्या पाते हैं?
२. कारण के विना क्या नहीं होता?
३. जो संयोग का आदि और वियोग का अन्त है वह क्या है?
४. क्या नहीं समझने के कारण यथावत् ज्ञान नहीं होता?
५. सृष्ट्यत्पत्ति की प्रथम अवस्था में जो प्रकृतिरूप कारण से कुछ स्थूल होता है उसे क्या कहते है?
६. जो मनुष्य विद्वान् सत्संगी होकर पूरा विचार नहीं करता वह किसमें पड़ा रहता है?
७. एकावस्थारूप प्रकृति अनित्य है या नित्य?
८. आदि सृष्टि मैथुनी होती है या नहीं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/१९ का सही उत्तर

१. काँटे २. नित्य ३. विनाश ४. ऋग्वेद
५. परमेश्वर ६. अविरोध ७. एकसी

"विस्तृत नियम पृष्ठ २६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१९

राजकुमार की रसोई

खुरासान के राजा और राजकुमार दोनों को ही उनके प्रतिद्वन्द्वी राजा ने बन्दी बना लिया। राजकुमार को जिस कमरे में रखा गया, वहीं पर स्वयं भोजन पका कर खाने के लिए निर्देश दे दिया गया और खिचड़ी पकाने के लिए उन्हें एक हाण्डी दे दी गई। एक दिन ऐसा हुआ, खिचड़ी पकाकर राजकुमार उसको चूल्हे से नीचे उतारकर स्वयं कुछ अन्य स्नानादि आवश्यक कार्य करने के लिए चला गया। इतने में एक कुत्ता आया और हाण्डी में रखी हुई पकी-पकाई खिचड़ी को लेकर चल दिया। जब वह कुत्ता उस हाण्डी को ले जा रहा था- उसी समय स्नान करके राजकुमार भी आ गया। अब कुत्ते को देखकर राजकुमार उसके पीछे दौड़ने और दुःखी होने के बजाय वहीं खड़ा-खड़ा हँसने लगा। राजकुमार को हँसता हुआ देखकर किसी ने पूछा- आपको तो इस स्थिति में कष्ट होना चाहिए था; आप हँस क्यों रहे हैं? राजकुमार ने कहा- मैं हँस इसलिए रहा हूँ कि कभी मेरी भोजन-सामग्री को लेकर ३६ ऊँट चलते थे, आज एक कुत्ता ही उठाए लिए चला जा रहा है।

कहानी में समय के दुर्धर्ष-चक्र का वर्णन किया गया है। किसी का भी समय सदा एक-जैसा नहीं रहता। समय सदा ही बदलता रहता है। यहाँ 'समय' से तात्पर्य समय में निरन्तर घट रही घटनाओं से है। कल जो राजकुमार था, आज एक

बन्दी है। कल जो वैभवशाली राजा था, आज भोजन के लिए भी तरस रहा है, आज भोजन के लिए भी तरस रहा है। कल तक जिसके निर्देश पर सब कुछ नाचने लगता था, जिसका हुक्म पालन करने के लिए हजारों लोग सामने खड़े रहते थे, आज वही दूसरों का मोहताज बना हुआ है। आज जो जिस स्थिति में है, वह कल भी इसी स्थिति में रहेगा- ऐसा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। आज जो विश्वविजयी है, कल दूसरा कोई ही उसका स्थान ले सकता है। आज जो हँसता-खेलता उत्सव मनाता नृत्य करता दिखाई दे रहा है, वही कल किसी भी कारणवश मायूस होकर ऐसा गिर पड़ सकता है जिसके रोकने से भी आँसू न रुकें।

देखो इधर एक नवदम्पति है। ऐसा लग रहा है जैसे स्वर्गिक

दिव्य सुख इनके पास उतर आया हो। अभी एक सप्ताह भी विवाह को पूरा नहीं हुआ था कि पतिदेव दुर्घटनाग्रस्त होकर शरीर छोड़ जाते हैं।

यह उनकी देवी कैसे विलाप कर रही है, जिसे कोई भी धीरज बँधाने में समर्थ नहीं हो पा रहा है? ये एक बड़े व्यापारी हैं, जिनका करोड़ों-अरबों में व्यापार चलता था। स्वयं भी तथा इनसे जुड़े सभी लोग भी आनन्द मनाया करते थे। अकस्मात् आज व्यापार में बीस करोड़ रुपये का एक ही दिन में घाटा आ गया; उसके कारण सब-के-सब बड़े ही उदास हो रहे हैं। यह विश्वविजयी टेनिस खिलाड़ी जो १४ वर्ष से निरन्तर विजय प्राप्त करता चला आ रहा था और अब यह अपने जीवन का अन्तिम मैच खेलने जा रहा है, विजयश्री दूसरे प्रतिद्वन्द्वी के गले का हार बन जाती है, इसे इस घटना से

बहुत ही कष्ट हो रहा है।

कल जो प्रधानमंत्री था, आज उससे कोई बात तक नहीं करना चाह रहा है। यह सब परिवर्तन का चक्र ही तो था, जो कि चक्रवर्ती युधिष्ठिर और राम जैसे धर्मात्मा जंगलों में घूमने लगे और उनकी सुकुमार देवियाँ भी उनके देखते-देखते दुःखों के सागर में डूब गयीं। कहीं द्रौपदी का चीरहरण हो रहा है तो सीता को रावण उठाकर ले जा रहा है। जो इस घूमते हुए तीव्रगामी चक्र को अपनी गहरी आँखों से देख लेते हैं, वे फिर रोना बन्द करके खुरासान के राजकुमार की तरह हँसने लगते हैं। जिन्हें यह परिवर्तन का चक्र दिखाई नहीं दे पाता केवल मात्र वे ही लोग शिकायत किया करते हैं, रोते हैं, बिलखते हैं और अपनी आन्तरिक सम्पत्ति 'धैर्य' को खो बैठते हैं।

वस्तुतः परिवर्तन का यह सतगामी चक्र जिसकी बुद्धि में स्थिर हो गया, बड़े-से-बड़े परिवर्तन में भी उसे क्यों दुःख होगा तथा बहुत बड़ी अनुकूल घटना घटने पर क्यों सुख होगा? उसे तो परिवर्तन मात्र दिखाई देगा। आज दुःख, कल सुख, परसों दुःख फिर सुख। इस दृष्टि को पाने पर व्यक्ति सुख व दुःख दोनों में ही 'सम' हो जाता है, तथा जो स्थिति या परिस्थिति सामने आती है उसे सहज रूप से स्वीकार करता रहता है। अनुकूल या प्रतिकूल कुछ रहता ही नहीं। जिन लोगों की यह अभीप्सा है कि हम आनन्दमय जीवन जीयें। सुख या दुःख दोनों ही हमें स्पर्श न कर पायें। उन्हें चाहिए कि अपनी आँखे खोलें और निरन्तर चल रहे इस परिवर्तन के साथ तादात्म्य स्थापित करें। द्रष्टा बनकर उससे अलग खड़े होकर उसे देखते रहें। इसी बात को महाभारतकार वेदव्यास युद्ध के बाद निराश हुए युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं-

संयोगा विप्रयोगान्ता जातानां प्राणिनां ध्रुवम्।
बुद्बुदा इव तोयेषु भवन्ति न भवन्ति च।।
सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं हि जीवितम्।। - शान्ति.१०/१२

जैसे पानी में बुलबुले उठते हैं और मिट जाते हैं, इसी प्रकार संसार में उत्पन्न प्राणियों के जो आपस में संयोग होते हैं, उनका अन्त निश्चय ही वियोग में होता है। समस्त संचयों का अन्त विनाश है। सारी उन्नतियों का अन्त पतन है। संयोगों का अन्त वियोग है। जीवन का अन्त मरण है। और भी- वृद्धावस्था और मृत्यु ये दोनों ही दो भेड़ियों के समान हैं, जो बलवान् और दुर्बल, छोटे और बड़े सभी प्राणियों को खा जाते हैं। कोई भी मनुष्य बुढ़ापे और मृत्यु को कभी लाँघ नहीं सकता, भले ही वह समुद्र पर्यन्त सारी पृथ्वी को जीत चुका हो।

प्राणियों को जो दुःख या सुख प्राप्त होता है, वह सब उन्हें विवश होकर सहना ही पड़ता है, क्योंकि उसके टालने का कोई उपाय नहीं है। अप्रिय वस्तुओं के साथ संयोग और अतिप्रिय वस्तुओं का वियोग, अर्थ-अनर्थ, सुख तथा दुःख, इन सब की प्राप्ति होती रहती है। सभी प्राणियों के लिए बैठना, सोना, चलना-फिरना, उठना और खाना-पीना ये सब कार्य होते रहते हैं।

कभी-कभी वैद्य भी रोगी, बलवान् भी दुर्बल और श्रीमान् भी असमर्थ हो जाते हैं। परिस्थितियों का उलट-फेर अत्यन्त अनोखा है।

उत्तम कुल में जन्म, बल-पराक्रम, आरोग्य, रूपसम्पदा, सौभाग्य और उपभोग की सामग्री, ये सब प्रारम्भ में प्रारब्ध के अनुसार ही प्राप्त होते हैं। जो दरिद्र हैं और जिन्हें सन्तान की इच्छा नहीं होती, उनके तो बहुत से पुत्र हो जाते हैं। जो धनवान् हैं, उनमें से किसी-किसी को एक पुत्र भी प्राप्त नहीं होता।

विधाता की लीला बड़ी विचित्र है। जिनके पास कुछ नहीं है, ऐसे दरिद्र भी दीर्घजीवी देखे जाते हैं। दूसरी ओर धनवान्

कुल में उत्पन्न हुए मनुष्य भी कीट -पतंगों के समान नष्ट हो जाते हैं। संसार में प्रायः धनवानों में खाने और पचाने की शक्ति ही नहीं होती और दरिद्र लोग लक्कड़ों को भी हजम कर जाते हैं। विद्वान् लोग शिकार और जुआ खेलने, स्त्रियों के संसर्ग में रहने और मद्यपान के प्रसंगों की बड़ी निन्दा करते हैं, परन्तु शास्त्रों के श्रवण और अध्ययन से सम्पन्न पुरुष भी पाप कर्मों में लिप्त देखे जाते हैं।

इस प्रकार परिस्थिति संस्कार व प्रयत्न के प्रभाव से सभी प्राणी इष्ट और अनिष्ट पदार्थों को प्राप्त करते रहते हैं। अनेक इष्ट और अनिष्ट की प्राप्ति का अदृष्ट के अतिरिक्त और कोई कारण दिखाई नहीं देता। सर्दी-गर्मी और वर्षा का चक्र काल से ही चलता है। इसी प्रकार मनुष्यों को युवावस्था-वृद्धावस्था भी काल से ही प्राप्त होती हैं।

वृद्धावस्था और मृत्यु के मुख में पड़े हुए मनुष्य को औषध, मन्त्र, होम और जप कुछ भी नहीं बचा सकते। जैसे समुद्र में

एक लक्कड़ एक ओर से, दूसरा दूसरी ओर से आकर, दोनों कुछ देर के लिए मिल जाते हैं, और मिलकर पुनः बिछुड़ जाते हैं, इसी प्रकार यहाँ प्राणियों के संयोग-वियोग होते रहते हैं। हमने संसार में अनेक बार जन्म लेकर सहस्रों माता-पिताओं तथा सैकड़ों स्त्री-पुत्रों के सुख का अनुभव किया है। परन्तु अब वे किसके हैं अथवा हम उनमें से किसके हैं? इस जीव का न तो कोई सम्बन्धी है और न यह किसी का सम्बन्धी है। जैसे मार्ग में चलने वालों को दूसरे पथिकों का साथ मिल जाता है, वैसे ही यहाँ भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्र और सुहृदों का समागम होता है। विवेकी पुरुष को अपने मन में चिन्तन करना चाहिए कि 'मैं कहाँ हूँ, कहाँ जाऊँगा, मैं कौन हूँ, मैं यहाँ किस लिए आया हूँ और किसलिए किसका शोक करूँ?'

आलस्य सुखस्वरूप प्रतीत होता है, परन्तु उसका अन्त दुःख में है, और कार्य करना दुःख रूप प्रतीत होता है, परन्तु वह सुख-उदय का कारण है। ऐश्वर्य-लक्ष्मी, लज्जा, धृति और कीर्ति, ये कार्य-दक्ष पुरुष में ही निवास करती हैं, आलसी में नहीं। बिना पुरुषार्थ के न तो सुहृद सुख देने में समर्थ हैं और न हम शत्रु के दुःख से बचने में। इसी प्रकार बिना पुरुषार्थ के न तो प्रजा धन दे सकती है और न धन सुख देता है।

अन्त में वेदव्यास युधिष्ठिर को एक बात कहकर मौन हो जाते हैं- हे पार्थ! विधाता ने जैसे कर्मों के लिए तुम्हारी सृष्टि की है, तुम उन्हीं का अनुष्ठान करो, उन्हीं से तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी। हे नरेश्वर! तुम कर्म-फल के स्वामी व नियन्ता नहीं हो।

वस्तुतः मनुष्य 'कर्म' का तो स्वामी है, पर कर्मफल का नहीं। सो जैसे मनुष्य के कर्म हैं यदि वे फलोन्मुख हो चुके हैं, तो उन्हें फल देने से कोई नहीं रोक सकता। हाँ! संचित कर्मों को व्यक्ति अपने नये कर्म-प्रवाह के द्वारा क्षीण (दुर्बल) कर सकता है, यह तो उसके सामर्थ्य में है। इस प्रकार खुरासान के राजकुमार की इस कहानी में जीवन के उतार-चढ़ाव, उत्थान-पतन, सुख-दुःख के प्रति उदासीन रहते हुए समभाव में रहने का उपदेश दिया गया है।

- पूज्य स्वामी सोमानन्द जी

साभार- जीवन का समाधान

सत्य, अहिंसा, दया-भाव,
की महिमा है अपरंपार।
जिसको इनका साथ मिले,
उसे पूजे यह संसार।।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

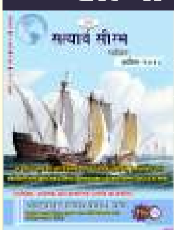

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

कथा सरित

बदलाव

जिन्दगी में बहुत सारे अवसर ऐसे आते हैं जब हम बुरे हालात का सामना कर रहे होते हैं और सोचते हैं कि क्या किया जा सकता है क्योंकि इतनी जल्दी तो सब कुछ बदलना संभव नहीं है और क्या पता मेरा ये छोटा सा बदलाव कुछ क्रान्ति लेकर आएगा या नहीं? लेकिन मैं आपको बता दूँ हर चीज या बदलाव की शुरुआत बहुत ही basic ढंग से होती है। कई बार तो सफलता हमसे बस थोड़े ही कदम दूर होती है कि हम हार मान लेते हैं। जबकि अपनी क्षमताओं पर भरोसा रख कर किया जाने वाला कोई भी बदलाव छोटा नहीं होता और वो हमारी जिन्दगी में एक नींव का पत्थर भी साबित हो सकता है। चलिए एक कहानी पढ़ते हैं इसके द्वारा समझने में आसानी होगी कि छोटा बदलाव किस कदर महत्वपूर्ण है।

एक लड़का सुबह-सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते-जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुवों की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला- 'नमस्ते आंटी! मैं आपको हमेशा इन कछुवों की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ आप ऐसा किस वजह से करती हो?' महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और जवाब दिया- 'मैं हर रविवार यहाँ आती हूँ और इन छोटे-छोटे कछुवों की पीठ साफ करते हुए सुख शान्ति का अनुभव लेती हूँ।' क्योंकि इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कचरा जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है इसलिए ये कछुवे तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमजोर हो जाते हैं इसलिए कवच को साफ करती हूँ।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान था। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला 'बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं लेकिन फिर भी आंटी एक बात सोचिये कि इन जैसे कितने कछुवे हैं जो इनसे भी बुरी हालत में हैं जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकतीं तो उनका क्या? क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा न।

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि- 'भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा लेकिन सोचो इस एक कछुवे की जिन्दगी में तो बदलाव आयेगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरुआत करें।'

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब एक हजार प्रतियों के लिए

१५००० रु.

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री के. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़

समाचार

शिवरात्रि पर्व बोधोत्सव के रूप में मनाया

५ मार्च, २०१६ को आर्य समाज, हिरणमगरी की ओर से शिवरात्रि पर्व बोधोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि हम जीवन में अनेक घटनाओं को रोज देखते रहते हैं, किन्तु कुछ विशेष अन्तर जीवन में नहीं आता। जो अन्तर्मन में देख लेता है, जान लेता है और उसी के अनुरूप जीवन जीता है वही सच्चा बोध है। महापुरुषों के जीवन में साधारण सी घटनाओं से चमत्कार हो जाता है और जीवन बदल जाता है। महर्षि दयानन्द के जीवन में भी लगभग २०० वर्ष पूर्व घटी छोटी सी घटना से प्राप्त बोध के कारण वे सच्चे शिव की खोज और मृत्यु पर विजय पाने हेतु घर छोड़कर निकल गए और पूरी दुनिया को ज्ञान का मार्ग दिखा दिया।

श्री कृष्ण कुमार सोनी ने भजन के माध्यम से महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रारम्भ में डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने स्वागत किया। आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती ललिता मेहरा ने आभार व्यक्त किया। प्रातः पं. रामदयाल के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। मंत्री संजय शांडिल्य द्वारा शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– रामदयाल मेहरा, पुस्तकालयाध्यक्ष

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में दिनांक ४ मार्च २०१६ को प्रातः ८ बजे से स्वामी दयानन्द बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यजमान श्री प्रदीप आर्य, सुमन आर्य, बी. डी. गुप्ता, आशा गुप्ता, डॉ. राम निवास एवं मयंक यादव बने।

यज्ञ, पंडित शिवकुमार कौशिक एवं डॉ. योगेन्द्र धामा द्वारा सम्पन्न कराया गया। डॉ. योगेन्द्र धामा ने सम्बोधन में सच्चा शिव क्या है, सत्य की प्राप्ति कैसे हो, कर्म में विश्वास क्यों करो, आदि विषयों पर प्रकाश डाला।

– बृजेन्द्र देव आर्य, मंत्री आर्य समाज

श्री ओमप्रकाश वर्मा सम्मानित

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १९५वाँ जन्मोत्सव समारोह आर्य समाज किशनपोल बाजार जयपुर में मनाया गया। जिसमें विशिष्ठ

अतिथि माननीय न्यायाधिपति एस.एस. कोठारी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी ठाकुर विक्रमसिंह जी, उपस्थित हुए। आनन्द कुमार श्रीवास्तव (भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी), दिल्ली, प्रो. आर.एस. कोठारी, सत्यव्रत जी सामवेदी, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, शिक्षाविद् एम.एल. गोयल उपस्थित रहे।

माननीय न्यायाधिपति ने अपने उद्बोधन में बताया कि वैदिक संस्कृति से पुष्पित होने पर, छात्र छात्राओं को संस्कारित करने पर ही, भारत में सुख शान्ति का साम्राज्य होगा। इस अवसर पर आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर के प्रधान श्री ओमप्रकाश वर्मा व प्रतिष्ठित सभासद कोशलाधीश का अभिनन्दन किया गया।

– कमलेश कुमार, मंत्री

स्वाइन फ्लू एवं मौसमी बुखार से बचाव हेतु आयुर्वेदिक काढ़ा वितरण

उदयपुर में स्वाइन फ्लू एवं मौसमी बुखार के फैलते प्रकोप के परिप्रेक्ष्य में दिनांक ०३ फरवरी को आयुर्वेदिक औषधालय, सुन्दरवास के मार्गदर्शन में आयुर्वेदिक काढ़ा तैयार कर, आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर ने लगभग १८०० क्षेत्र वासियों को काढ़ा पिलाकर रोग प्रतिरोधकता प्रदान की। इस शुभ कार्य में चन्द्रकला आर्य, ललिता मेहरा, लीला औदीच्य, तुलसी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, भंवरलाल आर्य, देवराज सिंह, कृष्ण कुमार सेनी, रामदयाल मेहरा, मुकेश पाठक और दयानन्द कन्या विद्यालय की अध्यापिकाओं का सराहनीय योगदान रहा।

– कृष्ण कुमार सोनी

ब्र. श्रवण आर्य को ५१०० रु. का पुरस्कार

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत में शास्त्री द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत ब्र. श्रवण आर्य ने टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित योगदर्शन सम्पूर्ण व यजुर्वेद ४० वां अध्याय (अर्थ सहित) कठस्थीकरण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर ५१०० रु. पुरस्कार राशि को प्राप्त किया।

ब्र.श्रवण के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ गुरुकुल के सभी सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद।

– आचार्य ओमप्रकाश

श्री छोटूसिंह आर्य की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह जी आर्य की १२ वीं पुण्यतिथि एवं श्रीमती शारदा देवी आर्य की छठी पुण्यतिथि पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज, अलवर में किया गया।

इस अवसर पर श्री ओममुनि जी को कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ की उपाधि प्रदान की गई। निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर का लाभ भी जन साधारण ने उठाया।

आचार्या डॉ. प्रियम्बदा जी को पितृ शोक

कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की प्रचार्या व प्रख्यात वैदिक विदुषी आचार्या प्रियम्बदा जी के पिता श्री गोविन्दराम ध्यानी का निधन दिनांक २० फरवरी २०१६ को हो गया। २४ फरवरी को गुरुकुल प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें अनेक गणमान्य जन उपस्थित हुए। न्यास व सत्यार्थ सौरभ के सभी सदस्यों की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास, उदयपुर

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर के नूतन सत्र (२०१६-२०) हेतु नए छात्रों की प्रवेश परीक्षा ७ अप्रैल २०१६ प्रातः १० बजे गुरुकुल करतारपुर में होगी। इसमें छठी, सातवीं, आठवीं, नौवीं, ग्यारहवीं तथा बी.ए प्रथम वर्ष हेतु नये छात्र आवेदन कर सकते हैं। परीक्षा लिखित एवं मौखिक होगी। ध्यातव्य है कि यह गुरुकुल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बद्ध है तथा भोजन एवं आवास की व्यवस्था पूर्णतया निःशुल्क है।

नवलखा महल में आगामी परियोजना का शुभारम्भ

आर्य जगत् को भलीभाँति ज्ञात है कि नवलखा महल स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा प्रतिवर्ष सहस्रों पर्यटकों को भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम सूत्रों एवं महर्षि देव दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय करा रही

है। 'सहस्रों' की संख्या को 'लाखों' तक ले जाने के लिए नवलखा महल, उदयपुर के जीर्णोद्धार, सौन्दर्यीकरण तथा उपयोगिता विस्तार की अत्यन्त उपयोगी व प्रभावशाली योजना तैयार की गई है। जिसके प्रथम चरण में स्थानीय विधायक माननीय गुलाबचन्द कटारिया द्वारा विधायक मद से प्रदत्त १०.३० लाख रु की राशि से गुम्बद निर्माण की आधारशिला रविवार १० मार्च १६ को सायं ४.०० बजे न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न यज्ञ के साथ श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास, उदयपुर के द्वारा रखी गई। इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्री चन्द्रसिंह कोठारी, महापौर-नगर निगम, उदयपुर के अतिरिक्त स्थानीय न्यासीगण व नगर की तीनों आर्य समाजों के आर्य परिवार उपस्थित थे। श्री कोठारी जी ने सम्पूर्ण परियोजना की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा नवलखा महल को भारतीय संस्कृति का गौरव बताया। - डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री

वेदों में शिक्षा विज्ञान पर मंथन

वैदिक मिशन, मुम्बई के तत्वावधान में २२ से २४ मार्च २०१६ में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें गुरुकुलों की उपयोगिता एवं वैदिक सिद्धान्तों के पाठ्यक्रम की एकरूपता तथा वेदों में शिक्षा विषयक निर्देश आदि पर गहन चिन्तन किया गया। २३ मार्च २०१६ को सरदार भगतसिंह जी का बलिदान दिवस भी मनाया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, अध्यक्ष वैदिक गुरुकुल परिषद, दिल्ली ने की। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, महामंत्री वैदिक विरक्त मंडल, दिल्ली, स्वामी धर्मानन्द जी, गुरुकुल आमसेना, उड़ीसा, श्री सुरेश जी आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मिठाई लाल सिंह जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई, श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्रप्रदेश, श्री विनय आर्य, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री अरुण जी अबरोल, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का सफल संयोजन श्री संदीप आर्य, मंत्री, वैदिक मिशन, मुम्बई ने किया। इस अवसर पर 'वेदों का दिव्य संदेश' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। धन्यवाद वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा किया गया।

- संदीप आर्य, मंत्री, वैदिक मिशन, मुम्बई

दयानन्द जयन्ती पर रैली

दयानन्द कन्या विद्यालय व आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में २२ मार्च २०१६ को विशाल रैली का आयोजन किया गया। डॉ. अमृतलाल तापड़िया संरक्षक आर्य समाज ने हरी झंडी दिखा कर रैली रवाना की। रैली में महर्षि दयानन्द सरस्वती के युगान्तरकारी कार्यक्रमों यथा अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, नशामुक्ति, धूम्रपान त्याग, देशभक्ति प्रतिष्ठापन, स्वदेशी की शिक्षा से सम्बन्धित तख्तियाँ लेकर छात्राएँ नारों को दोहरा रही थीं। रैली हिरणमगरी सेक्टर-४, ५ के प्रमुख मार्गों पर निकली। प्रमुख चौराहों पर आर्यसमाज के उप प्रधान श्री भँवर लाल आर्य, श्री कृष्ण कुमार सोनी व श्री अम्बालाल सनाढ्य ने महर्षि की शिक्षाओं पर उद्बोधन दिया। मुख्य समारोह आर्य समाज परिसर में वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती शारदा गुप्ता ने की। विद्यालय की मानक निदेशक श्रीमती पुष्पा सिंधी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पर श्रीमती कौशल्या सेन ने प्रकाश डाला। आर्यसमाज के मंत्री श्री संजय शाण्डिल्य द्वारा महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं पर उद्बोधन दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती जयश्री मोड़ एवं आभार प्रकाशन अध्यापिका श्रीमती रेणु शर्मा ने किया। कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ द्वारा किया गया। - संजय शांडिल्य, मंत्री, आर्य समाज, हिणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०२/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रयांशु गुप्ता; मनियाँ (राज.), श्री बाबुलाल आर्य; पिपल्यामण्डी (मन्दसौर), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मला गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन; नेमदारगंज (बिहार), श्री देवेन्द्र कुमार (डॉ.); भीलवाड़ा (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री यज्ञसेन चौहान; विजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, ब्र. विशाल; गुडा (विश्नोईया), श्री संजय आर्य; कतलुपुर (सोनीपत), श्री किशनाराम आर्य; बिल्लू (राज.); श्री रमेशचन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री रामदत्त आर्य; मनियाँ (धोलपुर), सुनिता सोनी; जेल रोड़ (बीकानेर), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), उषा देवी; बीकानेर (राज.), प्रधान आर्यसमाज; महर्षि दयानन्द मार्ग (बीकानेर), रूपादेवी सोनी; बीकानेर (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २६ पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

बहुदेवतावाद

जैसाकि हमने पूर्व में संकेत किया कि वेदानुयायियों में भी कारणवश अनेक देवी-देवताओं की कल्पना कर उन्हें उपास्य बना दिया गया। इस सब कार्य व्यापार में सबसे बड़ी विडम्बना यह हुई कि स्वयं देवों का देव परमपिता परमेश्वर जो केवल एकमात्र उपास्य है देवतावादियों में उपेक्षित हो गया। सम्राट की स्तुति-उपासना उपेक्षित हो भृत्यों की उपासना प्रारम्भ हो गई। क्या ये पुराण वर्णित देवतागण ईश्वर हैं? अगर ईश्वर ही हैं तो इनके गुण-कर्म-स्वभाव में इतना अन्तर क्यों? ये एक-दूसरे के अस्तित्व से अपरिचित क्यों? इनमें इतना विद्वेष क्यों? ईश्वर अजन्मा है ये जन्मते क्यों? ईश्वर नित्य है ये अनित्य क्यों? आदि-आदि। और अगर ये ईश्वर नहीं हैं तो इनका ईश्वर से क्या सम्बन्ध है, मनुष्यों से क्या सम्बन्ध है? क्या ये ईश्वर व मनुष्यों के बीच में बिचौलिये हैं? क्या इनकी उपासना (किसी भी विधि से) करनी पर्याप्त है फिर ईश्वरोपासना की आवश्यकता नहीं? क्या एक ही देवता की उपासना पर्याप्त है, या सबकी करनी होगी? क्या एक देवता सब प्रकार की उन्नति की वर्षा अपने भक्त पर कर सकता है या विशिष्ट क्षेत्र में ही उपलब्धि प्रदान कर सकता है? आदि-आदि सहस्रों प्रश्न हैं जिनके उत्तर यहाँ स्थानाभाव के कारण नहीं दिए जा सकते। मनीषी पाठक निम्न संकेतों पर स्वाध्याय, चिन्तन करें।

१. देवतागण स्वयं अन्य शक्ति की उपासना करते हैं। वे संन्ध्या-उपासना आदि करते हैं। क्यों?

२. देवताओं के पुराण वर्णित चरित्रों पर निष्पक्षता से विचार करें।

३. देवताओं में परस्पर गहन विरोध का पाया जाना। क्यों?

४. श्रेष्ठता का झगड़ा। एक की प्रशस्ति, अन्यों की बुराई। क्यों?

५. क्या देवी या देवता निरीह पशुओं के रक्त, मांस के प्यासे हो सकते हैं?

६. देवताओं के रंग रूप का निर्णय मनुष्य ने अपनी कल्पना से किया है। कल्पना प्रसूत की प्रामाणिकता कैसे?

७. कतिपय देवताओं के भोग प्रसाद का निषेध क्यों?

८. जो ग्रन्थ बहुदेवतावाद के आधार हैं उन्हीं में इनकी निन्दा क्यों?

९. देवतागण वस्तुतः ब्रह्म नहीं, जीव ही हैं क्योंकि उनमें अविद्या सुख, दुःख, राग, द्वेष आदि पाये जाते हैं।

अतएव यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बहुदेवतावाद की खाई में गिरकर मनुष्य देवों के देव परब्रह्म परमेश्वर से दूर चला जाता है। अतएव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों में आए देवता वाचक शब्दों के सत्यार्थ प्रस्तुत कर यह प्रबलता से स्थापित कर दिया कि वेदों में एक परमेश्वर के अतिरिक्त किसी उपास्य सत्ता का सर्वथा अभाव ही नहीं निषेध है।

एकेश्वरवाद-

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश॥

- ऋग्वेद ६/४७/१८

विश्व में जितनी अन्तर्निविष्ट दिव्य शक्तियाँ कार्य करती हैं, वह सब परब्रह्म परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने के लिए हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा ही विविध शक्तियों से व्याप्त है।

अन्य विद्वानों ने भी देव शब्द को अनेकत्र उसी रूप में समझा है जैसाकि महर्षि दयानन्द ने। महर्षि दयानन्द से इतर वेदभाष्यकारों में ही श्रद्धा रखने वाले बन्धुओं को इस पर ध्यान देना चाहिये।

सायणाचार्य ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका में लिखते हैं-

'वेदों में इन्द्रादि देवों या देवताओं का स्थान-स्थान पर आह्वान किया गया है उससे यह समझना चाहिये कि परमेश्वर ही इन्द्रादि के रूप में अवस्थित है और उसी का अन्ततः आह्वान होता है।' क्या यही बात महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्वत्र नहीं कहते कि परमेश्वर तो एक ही है, हाँ! गुण-कर्म-स्वभावानुसार उसके अनेक नाम हैं जिनको पृथक् देवता के रूप में भूलवश स्वीकार कर लिया गया है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

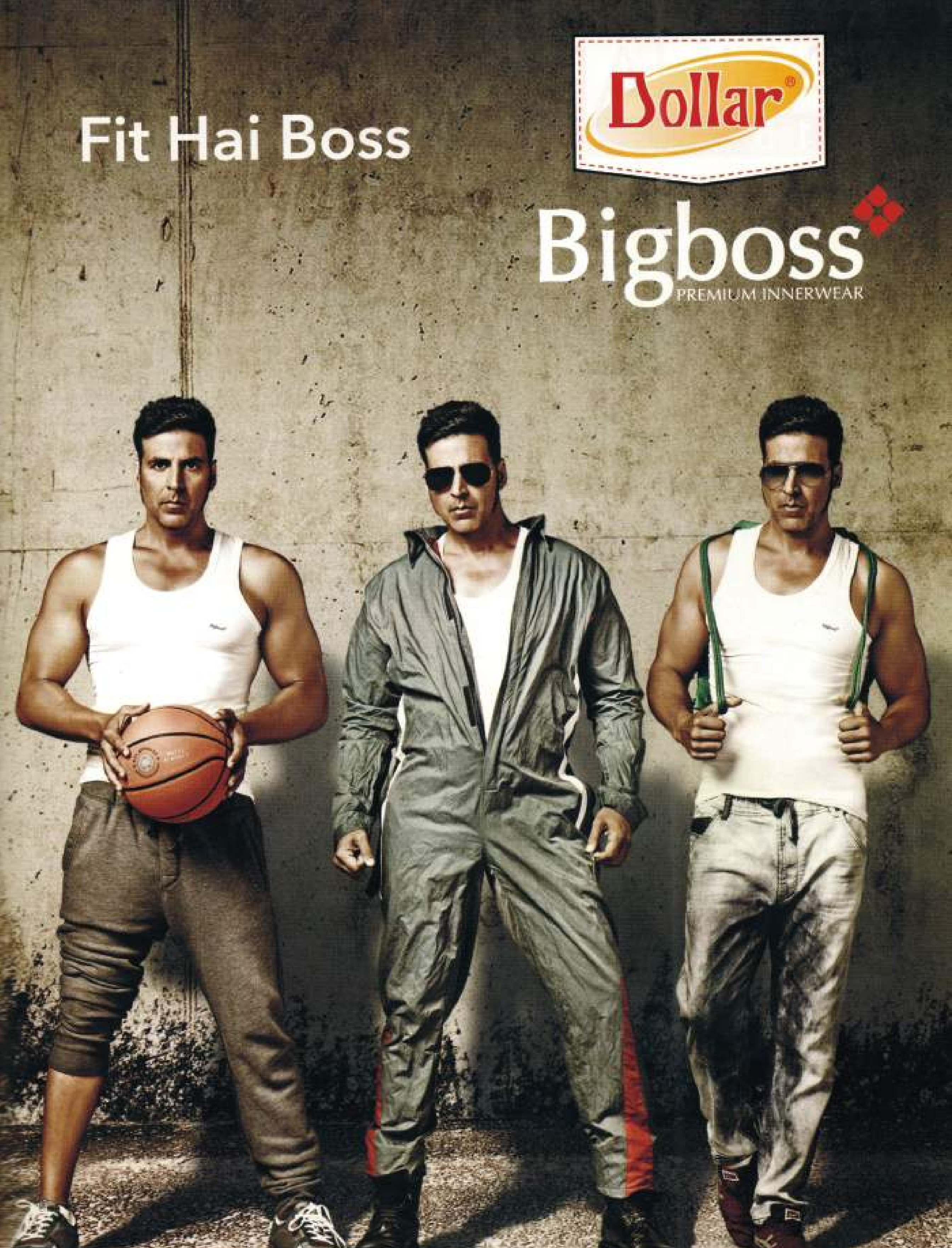
Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास- पृष्ठ ७५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर